दिव्य सुख की सरिता

कल्याण-कुंज भाग ५

शिव

श्रीहरिः

दिव्य सुखकी सरिता

[कल्याण-कुञ्ज भाग

'शिव'

श्री प्रकाशक
तीलाल जालान
गीताप्रेस, गोरखपुर

मूल्य पचास पैसे

पता—गीताप्रेस, पो० गीताप्रेस (गोरखपुर

श्रीहरिः

'शिव'का निवेदन

यह शिव-विचार-तरङ्गोंका पाँचवाँ भाग है। इसमें ऐसे विचार हैं, जिनमें दुःखरहित अनन्त अखण्ड दिव्य सुखकी सरिताका कल्याण-सुधामय प्रवाह है। पाठक इस सरितामें अवगाहन करें और इसके सुधा-रसका पान करके जीवनमें भगवान्‌का दिव्य भाव प्राप्त करें। यह निवेदन है।

श्रीहरिः

विषय-सूची

विषय

भगवान् शिव

अग्निशक्तिके बिना सिद्ध ही नहीं होता, उसी प्रकार शक्ति और शक्तिमान्‌का अविनाभाव एकत्व-सम्बन्ध है। वह नित्य पुरुषरूप है और यह नित्य ही नारी-स्वरूप। ऐसे दो होते हुए ही वे नित्य एक हैं। स्वरूपतः कभी दो होकर रह ही नहीं सकते। एकके बिना एकका अस्तित्व ही नहीं रहता।

याद रक्खो—पराशक्ति परब्रह्म परमात्मा शक्तिमान्‌के आश्रय बिना नहीं रहतीं; इसलिये वे 'परमात्मस्वरूपा' ही हैं। इसी प्रकार शक्तिमान् परब्रह्म पराशक्तिके कारण ही शक्तिमान् हैं, इसलिये वे नित्य 'पराशक्तिरूपा' ही हैं। इन दोनोंमें भेद मानना ही भ्रम है। परंतु इस प्रकार नित्य अभिन्न होनेपर भी इनमें प्रधानता शक्तिकी ही है।

याद रक्खो—'सच्चिदानन्दघन' सर्वातीत तत्त्व भी 'सच्चिदानन्द-शक्ति'का अभाव हो तो 'शून्य' रह जाता है। इसलिये उसका सत्-तत्त्व सत्-शक्तिसे, चित्-तत्त्व चित्-शक्तिसे और आनन्द-तत्त्व आह्लादिनी-शक्तिसे ही स्वरूपतः सिद्ध है।

याद रक्खो—परमात्माकी इन्हीं शक्तियोंको संधिनी, संवित् और ह्लादिनी-शक्ति भी बतलाया गया है। अपनी जिस स्वरूपाशक्तिके द्वारा भगवान् सबको सत्ता देते हैं, उस शक्तिका नाम 'संधिनी' है, जिसके द्वारा ज्ञान या प्रकाश दिया जाता है, वह 'संवित्' शक्ति है और स्वयं नित्य अनाद्यनन्त-परमानन्दस्वरूप होकर भी जिस शक्तिके द्वारा अपने आनन्दस्वरूपकी जीवोंको अनुभूति कराते हैं

तथा स्वयं भी आत्मस्वरूप विलक्षण परमानन्दका साक्षात्कार करते हैं, उस आनन्दमयी स्वरूपाशक्तिका नाम ह्लादिनी-शक्ति है ।

याद रक्खो—यह परमाश्चर्यमयी नित्य परमानन्दस्वरूप स्वरूप-मयी ह्लादिनीशक्ति ही स्नेह, प्रणय, मान, राग, अनुराग, भाव और महाभावरूपमें भक्ति या प्रेम-शब्द-वाच्य होकर परम प्रेमसुधाका प्रवाह बहाती है और उसमें अवगाहन करके भक्त तथा भगवान् दोनों ही परमानन्दका अतृप्त पान करते हैं । यह सब शक्तिका ही चमत्कार है ।

याद रक्खो—भगवान् विष्णु, भगवान् शंकर, भगवान् राम, भगवान् श्रीकृष्ण तथा अन्यान्य बड़े-छोटे किसीकी भी उपासना शक्ति-रहित रूपमें हो ही नहीं सकती । जो शक्ति विष्णुको विष्णु, जो शक्ति शिवको शिव, जो शक्ति रामको राम और जो शक्ति श्रीकृष्णको श्रीकृष्ण बनाये हुए हैं, जिनके बिना उनकी स्वरूप-सत्ता ही नहीं रहती, उन शक्तियोंके बिना जब वे शक्तिमान्‌रूप ही नहीं रहते, तब उनकी अकेलेकी—'शक्तिरहित शक्तिमान्'की उपासना कैसे हो सकती है ? शक्ति न रहनेपर तो उनका स्वरूप ही नहीं रहेगा ।

याद रक्खो—शक्तिको साथ माना जाय या न माना जाय, उपासनामें शक्तिका विग्रह साथ रक्खा जाय या न रक्खा जाय, जब उपासना होगी तब शक्ति साथ रहेगी ही । उसके बिना उपास्य तथा उसकी उपासना सम्भव ही नहीं ।

याद रक्खो—इसी प्रकार अकेली पराशक्तिकी भी उपासना

नहीं हो सकती। जब शक्ति शक्तिमान्‌में ही निवास करती है तब शक्तिकी उपासनासे शक्तिमान्‌की उपासना भी स्वतः ही हो जायगी। अतएव वैष्णव, शाक्त और शैवोंमें वस्तुतः कोई भेद नहीं है। पुरुषरूप शक्तिमान्‌की उपासना करनेवाले स्वाभाविक ही शक्तिकी उपासना करते हैं, चाहे अपनी जानमें न करें। और इसी प्रकार शक्तिकी उपासना करनेवाले भी शक्त्याधार शक्तिमान्‌की उपासना करते हैं। अतएव मुख्य या गौण भेदसे किसी भी शक्तिमान् या शक्तिकी उपासना की जाय, यदि उसमें अनन्यभाव है तो वह एकमात्र सच्चिदानन्द-तत्त्वकी ही उपासना है।

याद रक्खो—तथापि पृथक्-पृथक् रूपोंमें तथा विभिन्न नामोंसे शक्तिकी उपासना की जाती है। वैष्णवजन भगवती लक्ष्मीकी, भगवती सीताकी, भगवती राधाकी उपासना करते ही हैं। शैव भगवती उमा-सतीकी—दुर्गाकी उपासना करते हैं और इसी प्रकार शाक्त भी भगवान् शिव तथा भैरवकी उपासना करते हैं। विशेष-विशेष अवसरोंपर भगवान् स्वयं उपदेश देकर भगवती देवीकी उपासना अपने भक्तोंसे करवाते हैं और भगवती स्वयं उपदेश देकर भगवान्‌की उपासना करवाती हैं तथा इससे उन्हें बड़ी प्रसन्नता प्राप्त होती है। भगवान् रामकी उपासनासे सीताको, भगवान् श्रीकृष्णकी उपासनासे राधाको, भगवान् श्रीविष्णुकी उपासनासे लक्ष्मीको और भगवान् श्रीसदाशिवकी उपासनासे पार्वतीको एवं इसी प्रकार भगवती सीताकी उपासनासे रामको, भगवती राधाकी उपासनासे श्रीकृष्णको,

भगवती श्रीलक्ष्मीकी उपासनासे विष्णुको और पार्वतीकी उपासनासे श्रीमहादेवको अनिर्वचनीय सुखकी प्राप्ति होती है।

याद रक्खो—उपासनामें इष्टका रूप एक होना चाहिये यह परम आवश्यक है। तथापि उस एककी प्रसन्नता-सम्पादनके लिये, या उसके आज्ञापालनके लिये अन्य रूपकी उपासना करना भी कर्तव्य होता है। अर्जुनने भगवान् श्रीकृष्णकी आज्ञासे भगवान् शिवकी तथा 'एकानंशा' शक्तिकी उपासना की। स्वयं भगवान् श्रीकृष्णने भगवान् शंकरकी उपासना, भगवान् श्रीरामने स्वयं शक्ति तथा शिवकी उपासना की, श्रीशंकरने भगवान् विष्णु तथा रामकी एवं शक्तिकी आराधना की, गोपोंने अम्बिकाकी पूजा की, गोपरमणियों-ने कात्यायनीकी पूजा की; यादवोंने दुर्गापूजन किया एवं श्रीसीताजी और श्रीरुक्मिणीजीने अम्बिकापूजन किया। ये सब कथाएँ प्रसिद्ध हैं।

याद रक्खो—शक्ति और शक्तिमान्में अभेद मानते हुए ही जिनकी जिस रूपमें, जिस नाममें, जिस तत्त्वविशेषमें रुचि हो, जिसका जो इष्ट हो, उसको उसीकी उपासना उसीके अनुकूल पद्धतिसे करनी चाहिये। पर यह मानना चाहिये कि हमारे ही परम इष्टकी उपासना सभी लोग विभिन्न नाम-रूपोंसे करते हैं तथा हमारे ही परम इष्टदेव विभिन्न नाना रूपोंको धारण किये हुए हैं।

सब ब्रह्मरूप है

याद रक्खो—मैं, तुम, यह-वह, सृष्टि-संहार आदि रूप जो दृश्यप्रपञ्च दिखायी दे रहा है, वह एकमात्र अद्वितीय नित्य निर्म शान्त चिन्मय ब्रह्मकी ही अभिव्यक्ति है। इन समस्त सत्-रूप दीखनेवाले असत् पदार्थोंमें एकमात्र सत् परमात्मा ही प्रकट है वह सच्चिदानन्दघन ब्रह्म ही यह सम्पूर्ण जगत् है। उसके अतिरि जगत् नामकी कोई सत् वस्तु कभी न थी, न है।

याद रक्खो—आकाशकी शून्यता आकाश ही है, जलकी द्रवता जल ही है, प्रकाशकी आभा प्रकाश ही है, वायुका स्पन्दन वायु ही है, समुद्रकी तरंगें समुद्र ही है, बर्फकी शीतलता बर्फ ही है, काजलकी कालिमा काजल ही है—ठीक वैसे ही ब्रह्ममें दीखनेवाला यह समस्त जगत् भी ब्रह्म ही है।

सब ब्रह्मरूप है

याद रक्खो—जैसे स्वप्नमें दीखनेवाले दृश्य, बालकको दीखनेवाला बैताल, रज्जुमें दीखनेवाला सर्प, स्वर्णमें दीखनेवाले कड़े-बाजूबंद, प्रशान्त महासागरमें उठनेवाली तरंगें और आवर्त, मिट्टीमें दीखनेवाले घड़े-सिकोरे और आकाशमें दीखनेवाले नगर-घर आदि सब उपाधिमात्र हैं, भ्रममात्र हैं, वैसे ब्रह्ममें दीखनेवाला यह सम्पूर्ण जगत् भ्रममात्र है। वस्तुतः उसकी कोई भिन्न सत्ता है ही नहीं।

याद रक्खो—यह समस्त जगत् वस्तुतः भ्रान्तिसे ही जगद्रूप दीखता है। यथार्थ तत्त्वका ज्ञान होनेपर यह जगद्भ्रम वैसे ही नष्ट हो जाता है जैसे रस्सीका ज्ञान होनेपर सर्पकी भ्रान्ति नष्ट हो जाती है। अथवा आकार तथा नामकी व्यावहारिक विभिन्नता प्रतीत होते हुए भी जैसे स्वर्णका ज्ञान होनेपर स्वर्ण-भूषणोंके नाम-रूपके कारण होनेवाली विभिन्नता तथा भिन्नरूपता नष्ट हो जाती है—एकमात्र स्वर्ण ही दीखने लगता है, वैसे ही ब्रह्मका ज्ञान होनेपर विभिन्न नामरूपात्मक यह विशाल विश्व ब्रह्मरूप ही दीखने लगता है, कहीं भी कोई भिन्न सत्ता रहती ही नहीं। वास्तवमें तो सच्चिदानन्दघन परमात्माके अतिरिक्त और कुछ है ही नहीं।

याद रक्खो—यह समस्त दृश्य जगत् तथा इसमें होनेवाली सभी क्रियाएँ चिदानन्दघन ब्रह्मका ही संकल्प है। वह संकल्प भी ब्रह्म ही है। ब्रह्म जगत्का कारण नहीं है; क्योंकि जगत्रूपी कार्य सर्वथा असत् ही है। नित्य सत्य ब्रह्मसे अनित्य असत् जगत्की उत्पत्ति, नित्य निरतिशय दिव्य परमानन्दघन परमात्मासे दुःखपूर्ण जगत्की उत्पत्ति, प्रकाशमय परब्रह्मसे तमोमय जगत्की

उत्पत्ति सम्भव ही नहीं। अतएव ब्रह्म तथा जगत्में क
कार्यभाव नहीं है, ब्रह्म ही जगत्‌रूपमें भासित हो रहा है।
चिदाकाशमें ही चिदाकाशसे यह सब खेल हो रहे हैं। उ
अतिरिक्त अन्य कुछ है ही नहीं।

याद रक्खो—जब एक ब्रह्मके अतिरिक्त कोई सत्ता ही न
रह जाती, तब भिन्न अहंकार कहाँ रहेगा और अहंकारका अ
होते ही राग-द्वेष, ममता-मोह, मेरा-तेरा आदि सब मिथ्या वि
मिट जाते हैं, जैसे स्वप्नसे जागते ही स्वप्नका सारा संसार सर्व
मिट जाता है। फिर जगत्में रहता हुआ भी इस ज्ञानको प्र
जीवन्मुक्त पुरुष नित्य निरन्तर ब्रह्ममें ही स्थित रहता है। व
जगत्‌के आदि, मध्य, अन्त सभी अवस्थाओंमें समचित्त रहता है
क्योंकि तब उसका चित्त ही नहीं रह जाता। अतएव वह न
प्राप्त हुई प्रिय कहलानेवाली वस्तुका अभिनन्दन करता है, न अप्रिय
द्वेष करता है, न नष्ट हुई प्रिय वस्तुके लिये शोक करता है औ
न अप्राप्त वस्तुकी इच्छा ही करता है।

याद रक्खो—ऐसा परमतत्त्वको प्राप्त—परमात्मामें अभिन्नभाव
स्थित पुरुष जगत्‌की क्षणभंगुर अवस्थाको अपनी प्रशान्त ब्रा
स्थितिके अंदर हँसता हुआ देखता है। उसके लिये न कुछ पाना
शेष रह जाता है, न कुछ करना रह जाता है। वह सर्वव्यापी
परब्रह्म परमात्मस्वरूप ही बन जाता है। यही योगवासिष्ठकी शिक्षा है।

जीव भगवान्‌का सनातन अंश

याद रक्खो—तुम शरीर नहीं हो; तुम सच्चे अर्थमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और पिता, पुत्र, पति, गुरु, पत्नी, माता आदि नहीं हो। तुम हो सच्चिदानन्द आत्मा या तुम हो भगवान्‌के सनातन अंश।

याद रक्खो—यह शरीर तथा इस शरीरके सम्बन्धको लेकर कहे जानेवाले नाम सब कल्पित हैं और हैं केवल लोगदेखाऊ या कामचलाऊ—व्यावहारिक जगत्‌में केवल व्यवहारके लिये। ये न तुम्हारा स्वरूप हैं, न इनसे तुम्हारा कोई सम्बन्ध है।

याद रक्खो—शरीरको तथा शरीरके सम्बन्धसे कहे जानेवाले नामोंको अपना स्वरूप मान लेनेके कारण ही शरीरमें तथा प्राणि-पदार्थोंमें तुम्हारी अहंता, ममता, आसक्ति हो गयी है तथा इनकी कामना-वासनामें फँसकर तुम बिना हुए ही दुखी हो रहे हो। और यह दुःख जबतक इस शरीर तथा शरीरके सम्बन्धसे कहे जानेवाले नामोंमें स्वरूप-बुद्धि रहेगी, तबतक मिटेगा ही नहीं—चाहे बाहरी स्थिति कुछ भी, कैसी भी क्यों न हो जाय।

याद रक्खो—इस मिथ्या मान्यताके कारण ही ममता, आसक्ति, कामनाके वश हुए तुम नाना प्रकारकी अनन्त आशाकी फाँसियोंसे बँधे हुए हो, इन्हींके कारण तुम काम-क्रोध-लोभपरायण हुए भाँति-भाँतिके नये-नये पाप कर रहे हो और इसीलिये जीवनके अन्तिम क्षणतक तुम हजारों-लाखों नयी-नयी चिन्ताओंकी ज्वालासे जलते रहते हो। परिणामस्वरूप तुम्हें तीन चीजें हाथ लगती हैं—१—दिन-रातकी चिन्ताज्वाला, २—कामना-पूर्तिके लिये किये जानेवाले पापोंका संग्रह और ३—जन्म-मृत्युके चक्रमें ही डाले रखनेवाली मानव-जीवनकी असफलता।

याद रक्खो—तुमको मनुष्य इसलिये नहीं बनाया गया कि तुम अपनी बुद्धिका दुरुपयोग करके जन्म-मृत्युके चक्रको और भी लंबा कर लो, अज्ञानके बन्धनको और भी सुदृढ़ कर लो, आसुरी योनियों तथा अत्यन्त पीडादायक नरकादिमें पचनेकी और भी निश्चित सुव्यवस्था कर लो। तुम्हें तो यह मानवशरीर मिला था—जन्म-मृत्युके चक्रसे छूटकर अपने सत्य नित्य चिदानन्दघन आत्मस्वरूपकी प्राप्ति या भगवान्‌की प्राप्तिके लिये, समस्त बन्धनोंको सदाके लिये काट डालनेके लिये और नित्य-निरन्तर भगवान्‌में ही स्थिति प्राप्त करनेके लिये।

याद रक्खो—अब भी समय है, अब भी चेतकर सन्मार्गपर आनेसे काम बन सकता है। अब भी मानव-जीवन सफल हो सकता है। तुम आज ही, अभी इस सत्यको समझकर इसे स्वीकार कर लो और शरीर तथा शरीरके सम्बन्धसे कहे जानेवाले नामोंमें स्व-रूपकी मिथ्या कल्पना छोड़ दो। एवं अपनेको नित्य-सत्य-चिद्घन आत्मा समझ लो या भगवान्‌की लीलामें सेवा करनेवाला एक भगवान्‌का अनन्य सेवक मान लो। फिर तुम्हारी जगत्‌के प्राणिपदार्थोंमें ममता, आसक्ति तथा उनके लिये आशा और उनमें कामना नहीं रहेगी; फिर, व्यावहारिक जगत्‌में सारे काम होंगे या तो स्वप्नकी तरह या भगवान्‌की पवित्र सेवाके रूपमें।

याद रक्खो—ऐसा होते ही तुम्हारी सारी चिन्ताएँ दूर हो जायँगी, पापकी कल्पना तुम्हारे चित्तके समीप भी नहीं आ सकेगी और तुम यहीं आत्मस्वरूप या भागवत-जीवनमें सुप्रतिष्ठित होकर जीवनकी परम और चरम सफलता लाभ करोगे।

वैराग्यवान् पुरुष ही सुखी

याद रक्खो—जबतक संसारके भोगपदार्थोंमें सुखकी भ्रान्ति है और इस कारण जबतक संसारके प्राणी-पदार्थोंमें ममता और आसक्ति है, तबतक न तो सच्ची भक्ति प्राप्त होगी, न ज्ञान ही मिलेगा और न योगसाधना ही सिद्ध होगी। निष्काम कर्मका साधन भी बिना विषय-वैराग्यके नहीं हो सकता।

याद रक्खो—आसक्ति मनमें होती है और उसका त्याग भी मनसे ही होता है। इसलिये न 'वैरागी' या 'वीतरागी' नाम रखनेसे विषयासक्तिका त्याग होता है न बाहरी त्यागसे। नाम रखना और वस्तुतः वैराग्यकी इच्छा न करना तो दम्भ है। परंतु जबतक

परम ध्येय

याद रक्खो—तुम संसारमें इसलिये मनुष्य बनकर नहीं आये हो कि दिन-रात शरीरके आराम तथा कल्पित नामके यशके लिये ही प्रयत्नशील रहो और मोहमें अंधे होकर ऐसे कुकर्मोंमें लगे रहो कि जिनके फलस्वरूप असंख्य जन्म-जन्मान्तरोंतक फिर कभी मनुष्य बननेका अवसर ही न आवे।

याद रक्खो—तुम नित्य सच्चित्स्वरूप आनन्दमय आत्मा हो, सच्चिदानन्दघन भगवान्‌के सनातन अंश हो। अपने इस स्वरूपको भूलकर तुम अपनेको अमुक नामवाला शरीरधारी मनुष्य मान रहे हो और इस शरीरमें तथा शरीरसम्बन्धी प्राणी-पदार्थोंमें ही राग-द्वेष करके दिन-रात भय-विषादकी भट्ठीमें जल रहे हो। जीवनभर एक

क्षणके लिये भी तुम्हें कभी यथार्थ आनन्द तथा सच्ची शान्तिके दर्शन नहीं होते। अपनी इस मिथ्या कल्पना तथा भ्रमजनित बुरी स्थितिपर विचार करो और गहराईसे सोचकर अनुभव करो कि तुम यह शरीर नहीं हो, तुम यह नाम भी नहीं हो।

याद रक्खो—जबतक तुम इस शरीर और नामको ही अपना स्वरूप मानते रहोगे, तबतक तुम्हें कभी सुख होगा ही नहीं; क्योंकि यह शरीर तथा इसके सम्बन्धी सभी प्राणी-पदार्थ अनित्य, परिवर्तनशील, क्षणभंगुर तथा अपूर्ण हैं। इनका वियोग और विनाश होगा ही। तुम्हारा जो अनन्त, नित्य, शाश्वत स्वरूप है, वह नित्य अविनाशी अपरिवर्तनीय और पूर्ण है। उसीमें अपनेको स्थित करो। फिर चाहे संसारमें, शरीरमें, नाममें, शरीरसे सम्बन्ध रखनेवाले प्राणी-पदार्थ तथा परिस्थितिमें कुछ भी परिवर्तन हो जाय, तुम सदा आत्मानन्द या भगवदानन्दमें ही स्थित रहोगे। तुमपर किसीका कोई भी असर नहीं होगा।

याद रक्खो—यहाँ न कुछ भी तुम्हारा है, न पराया है। अपना-पराया मानकर ही तुम राग-द्वेषके वश हो जाते हो। जबतक प्रारब्धवश शरीर है, तबतक व्यवहारके लिये सब चीजें तुम्हें यथायोग्य प्राप्त हैं। ये केवल व्यवहारके लिये ही हैं। तुम्हारे स्वरूपसे इनका कुछ भी, कहीं भी यथार्थमें कोई सम्बन्ध नहीं है। इन्हें व्यवहारोपयोगी मानकर ही यथायोग्य व्यवहार करो। जिसका त्याग उचित है, उसका त्याग करो एवं जिसका ग्रहण उचित है, उसका ग्रहण करो। परंतु द्वेष या राग किसीमें मत करो। या यों समझो कि यह सब लीलामय

भगवान्‌की नित्यलीला है । लीलामें परिवर्तनका और विभिन्न रसोंका, रंगोंका होना आवश्यक है । अतएव यहाँ जो कुछ भी हो रहा है, सभी भगवान्‌की लीलाका ही दृश्य सामने आ रहा है । उनकी लीला-भंगिमाको, नाट्य-निपुणताको देख-देखकर सदा उल्लसित होते रहो । नित्य नवीन नाट्य, नित्य नवीन अभिनय ! कभी काली घटा, कभी प्रखर प्रकाश; कभी मृत्यु, कभी जन्म; कभी हानि, कभी लाभ; कभी अयश-अकीर्ति, कभी यश-कीर्ति; कभी अपमान, कभी सम्मान; कभी अप्रिय प्रसङ्ग, कभी प्रिय प्रसङ्ग—ये सभी लीलाके ही विविध अङ्ग हैं । वस्तुतः एक लीलामय भगवान्‌के अतिरिक्त और कुछ भी है ही नहीं ।

याद रक्खो—जो मनुष्य प्रत्येक परिस्थितिमें लीलामय भगवान्‌को, भगवान्‌की लीलाको अथवा नित्य एकरस सच्चिदानन्द-घन परमात्माको ही देखता है, वही यथार्थ देखता है । सर्वत्र समभावसे व्याप्त भगवान् या आत्माको देखनेवाले उस पुरुषकी स्थिति नित्य चिदानन्दमय-स्वरूप ही रहती है । वह जन्म-मरणके चक्रसे मुक्त हो जाता है । यही मानव-जीवनका परम ध्येय है ।

याद रक्खो—इस परम ध्येयकी प्राप्तिके लिये ही तुम मनुष्य बनकर संसारमें आये हो । अतः संसारमें यथायोग्य व्यवहार करते हुए सदा सावधानीके साथ इस ध्येयकी प्राप्तिके प्रयत्नमें लगे रहना ही तुम्हारा परम कर्तव्य है । इससे कभी किसी अवस्थामें भी विचलित न होओ । अपने ध्येयको निश्चितरूपसे प्राप्त कर लो ।

भगवत्प्रेममें महान् शक्ति

याद रक्खो—विशुद्ध भगवत्प्रेमके साधनमें एक महान् शक्ति है जो स्वार्थ, घृणा, भय, काम, क्रोध, लोभ, अभिमान, द्वेष और वैर आदि दुर्भावोंपर विजय प्राप्त कराकर मनुष्यके जीवनको सेवा-परायण, सौहार्दमय, निर्भय, काम-क्रोध-लोभसे रहित, विनम्र, द्वेष तथा वैरभावसे शून्य एवं विभिन्न प्रकारसे प्राणीमात्रकी सेवाके द्वारा सर्वथा भगवत्सेवामें ही नियुक्त कर देती है। फिर इन दुर्भावोंके लिये जीवनमें कोई स्थान ही नहीं रह जाता।

याद रक्खो—तुम कभी-कभी इन दुर्भावरूपी शत्रुओंसे अत्यन्त उत्पीड़ित होकर इनसे छुटकारा पाना तो चाहते हो, परंतु भगवान्‌में अविश्वासजनित मानसिक दुर्बलताके कारण, जो भोग-सुखमें विश्वास

उत्पन्न करा देती है, उन शत्रुओंमेंसे ही किसीका आश्रय उसीके साथी दूसरे शत्रुओंको मारना चाहते हो। यह भूल जा कि ये सभी परस्पर एक दूसरेके सहायक, पोषक और संवर्धक है

याद रक्खो—जैसे अन्धकारसे अन्धकारका नाश नहीं जा सकता और शत्रुओंसे शत्रुओंका नाश नहीं हो सकता, वैसे पापसे पापका नाश सम्भव नहीं है। इन दुर्भावोंके सेवनसे इन परिवार और बल बढ़ता ही जायगा और परिणामस्वरूप तुम्हारा जी पाप-दोषमय बन जायगा।

याद रक्खो—इसका प्रधान कारण है—विषयानुराग-इन्द्रिय-भोगोंमें आसक्ति या प्रीति। इसीलिये तुम्हें जब भ्रमसे ऐ दीखता है कि उपर्युक्त दोषोंका आश्रय छोड़ देनेसे अमुक भोग न रहेगा या नहीं मिलेगा, तब तुम उन दोषोंको अपना सहाय सुहृद् मानकर उन्हें अपनाये रखते हो तथा उन्हें छोड़नेमें विपी या हानिकी सम्भावना देखते हो। यहीं तुम्हारा भ्रम और भी ब जाता है।

याद रक्खो—भगवत्प्रेमके पथिकोंको जिस दुर्लभ परमानन्दकी प्राप्ति पथमें ही होने लगती है, उसका भोगराज्यमें कहीं अस्तित्व ही नहीं है। तथापि दूरसे देखनेवालोंको यह भ्रम हो जाता है कि इन भगवत्प्रेमके पथिक कहे जानेवाले लोगोंके सांसारिक सुखोंका नाश हो रहा है और वे भीषण दुःखसमुद्रमें डूब रहे हैं। प्रकारान्तरसे बात भी सत्य है; जैसे सूर्यके प्रकाशमें दीपकका कोई महत्त्व प्रयोजन नहीं रहता, अन्धकार तो मर ही जाता है, वैसी ही

यहाँ भोग-सुखोंकी होती है । इसीसे भोगपरायण लोग 'प्रेम' के नाम-से ही डर जाते हैं; क्योंकि प्रेमकी भित्ति ही भोग और भोगासक्ति-का सर्वथा त्याग है, उनसे एकदम रहित हो जाना है ।

याद रक्खो—फिर यदि भोगपरायणोंकी दृष्टिमें प्रेमियोंमें कोई भोग रहते दीखते हैं तो वे वस्तुतः भोग नहीं होते । प्रेमास्पद भगवान्के इच्छानुसार रहे हुए सेवाके साधन होते हैं । वे पूजाके उपकरण होते हैं—इन्द्रियके चरितार्थ करनेवाले विषय नहीं !

याद रक्खो—यह तो प्रेमराज्यमें प्रविष्ट पथिकोंकी बात है । जो वस्तुतः भगवत्प्रेमको प्राप्त कर चुके हैं, उनका जीवन तो इतना पवित्रतम उच्चातिउच्च स्तरपर पहुँचा हुआ होता है कि स्वयं पूर्णकाम आप्तकाम भगवान् उनसे मिलनेके लिये लालायित रहते हैं । सच तो यह है कि भगवान् उनसे सदा मिले ही रहते हैं । भगवान् उनके दिव्य दानके गृहीता बनते हैं और वे सहज दाता ।

याद रक्खो—उनमें दातापनका अभिमान तो होता ही नहीं, उनके पास अपना कुछ है या वे कुछ दे सकते हैं—ऐसी कल्पना भी उनके जीवनमें कहीं नहीं रह जाती, परंतु स्वयं भगवान् ही उन परम अकिञ्चनोंमें इतनी दुर्लभ वस्तु देखते हैं कि वे निरन्तर उनको बिना किसी व्यवधानके अपने साथ रखनेमें अथवा उनके साथ रहने-में—सर्वथा घुल-मिलकर रहनेमें आनन्दलाभ करते हैं । यही प्रेमका महान् चमत्कार है ।

अनन्त और अपार भगवत्कृपा

याद रक्खो—भगवत्कृपा अनन्त और अपार है। वह सभी प्राणियोंपर सभी परिस्थितियोंमें, सभी समय बरसती रहती है। जो उसपर विश्वास करता है, वह उस सर्वथा समभावसे सबको प्राप्त होनेवाली कृपाका अनुभव कर सकता है। जिसका मन अविश्वासके तथा संदेहके अन्धकारसे ढका है, उसे उस परम रहस्यमयी अहैतुकी कृपाके दर्शन नहीं होते।

याद रक्खो—उस कृपाके असंख्य रूप हैं और वह आवश्यकतानुसार विभिन्न रूपोंमें प्रकट होती रहती है। भगवान्‌के अनुग्रहपूर्ण मङ्गलमय विधानमें मनुष्य जब संदेह करता है, उसके विरुद्ध निश्चय तथा आचरण करता है, तब भगवत्कृपा भयानक रूपमें प्रकट होकर विपत्ति और वेदनाके द्वारा उसके हृदयकी विशुद्धि करती है और जब मनुष्य विश्वासपूर्ण हृदयसे प्रत्येक परिस्थितिमें उसके अनुकूल आचरण करता है, तब वह कृपा बड़े सौम्यरूपमें आत्मप्रकाश करती है।

याद रक्खो—भगवत्कृपा किसी भी रूपमें प्रकट हो, वह सदा मङ्गलमयी है और मङ्गल ही करती है। दवा मीठी भी दी जाती है, कड़वी भी; कहीं-कहीं अङ्ग काटकर भी चिकित्सक अंदरके मवादको

निकालता है। पर इन सबमें उद्देश्य एक ही होता है—रोग-नाश। रोगके अनुसार ही दवाका प्रयोग या ऑपरेशनकी क्रिया की जाती है; इसी प्रकार भगवत्कृपाके भी विविध रूप होते हैं—हमारे परम मङ्गलके लिये ही।

याद रक्खो—बाहरी वस्तुओं तथा परिस्थितियोंसे कृपाका पता नहीं लगता। अनुकूल वस्तु या परिस्थितिमें कृपा समझना और प्रतिकूलमें कृपाका अभाव मानना सर्वथा भ्रम है। कृपामय भगवान्-का प्रत्येक विधान कल्याणमय है, 'वे जो कुछ भी करते हैं, सर्वथा निर्भ्रान्त रूपसे हमारे परम कल्याणके लिये ही करते हैं।' जैसे सुख-सौभाग्यमें अत्यन्त अनुकूल दिखायी देनेवाले पदार्थ और परिस्थिति-की प्राप्तिमें उनकी कृपा रहती है, ठीक वैसी ही दुःख, दुर्भाग्य, अत्यन्त प्रतिकूल दीखनेवाले पदार्थ और परिस्थितिकी प्राप्तिमें रहती है।

याद रक्खो—जब तुम विश्वासकी दृष्टि प्राप्त कर लोगे, तब तुम्हें यह प्रत्यक्ष दिखलायी देगा कि तुम्हें प्राप्त होनेवाले प्रत्येक पदार्थ और परिस्थितिमें भगवत्कृपाका मङ्गलमय कार्य हो रहा है। फिर तुम्हें चोटका दुःख जरा भी न होगा; वरं चोट करनेवाले परम प्रेमास्पद परम कल्याणमय नित्य सहज-सुहृद् प्रभुके मङ्गलमय कोमल आनन्दमय कर-स्पर्शका आनन्द प्राप्त होगा।

याद रक्खो—भगवान् सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, सर्वथा निर्भ्रान्त, सर्वलोकमहेश्वर हैं; वे सब कुछ जानते, सब कुछ कर सकते हैं एवं सबके स्वामी हैं। उनसे कभी भूल नहीं होती। ऐसे भगवान् सतत

सावधानीके साथ सहजरूपमें तुमपर कृपा-वर्षा करते रहते हैं। विश्वास करो, अपनेको उनके चरणोंपर विना किसी शर्तके डाल उनके प्रत्येक विधानकी मङ्गलमयतामें विश्वास करके उसका ह्रद स्वागत करो; अपनेको सम्पूर्ण समर्पण कर दो। उनके कृप विधानको बदलाना मत चाहो। फिर देखोगे—उनकी कृपा स तुम्हारे जीवनपर बरसेगी तथा तुम्हारे वर्तमान और भविष्यको प उज्ज्वल तथा परम आनन्दमय बना देगी।

याद रक्खो—तुम जो कुछ प्राप्त करना चाहते हो, जब नहीं होता और जब उसमें अचानक ऐसी बाधा आ जाती है तुम्हारे मनोरथको नष्ट कर देती है, तब वहाँ तुम भगवान्‌की कृपा दर्शन करो। भगवत्कृपा ही बाधा बनकर आयी है और तुम्हें भा दुःखसे बचानेके लिये, जिसकी तुम्हें कल्पना नहीं है और व भलीभाँति जानती है; तुम्हारे इस कार्यको असफल कर देती है।

याद रक्खो—तुम भगवत्कृपासे अपने मनका काम करवान चाहते हो, यही तुम्हारी बड़ी भूल है। यहीं तुम सीधी तुमप उतरनेवाली कृपाकी धारामें बाधा देते हो। भगवत्कृपासे कह दो— मुक्तकण्ठसे विश्वासकी मौन वाणीमें स्पष्ट कह दो कि 'तुम जो ठीक समझो, जब ठीक समझो, जैसे ठीक समझो, वही, उस समय, वैसे ही करो।' अपनेको बिना किसी शर्तके, बिना कुछ बचाये— भगवत्कृपाके समर्पण कर दो। फिर भगवत्कृपा निर्बाधरूपसे अपना मङ्गलमय दर्शन देकर तुम्हें कृतार्थ कर देगी।

भगवान् सर्वत्र, सदा और सबके

याद रक्खो—ऐसा कोई स्थान नहीं है और ऐसा कोई समय नहीं है, जिसमें भगवान् न हों एवं ऐसा कोई प्राणी नहीं है, जिसपर भगवान्की कृपा न हो, जिसको भगवान् अपनानेसे कभी इनकार करते हों।

याद रक्खो—भगवान् स्वभावसे ही सुहृद् हैं, वे कृपाके ही मूर्तिमान् स्वरूप हैं। उनमें किसी भी पापीके प्रति कभी घृणा नहीं होती। किसने पहले क्या किया है, कौन कैसा रहा है, किस देश-वेषका है, किस जाति-कुलका है, किस धर्म-सम्प्रदायका है,—यह कुछ भी वे नहीं देखते। वे देखते हैं—केवल उसके वर्तमान मनको, उसके मनकी वर्तमान परिस्थितिको, उसकी सच्ची चाहको। कोई

भी, कहीं भी, किसी भी समय अनन्य मनसे उनकी चाह करत है; उनकी कृपा, प्रीति या दर्शन पानेके लिये एकान्त लालायित हो जाता है, भगवान् उसके इच्छानुसार उसपर कृपा करते, उसे प्रीतिदान करते या दर्शन देकर कृतार्थ कर देते हैं।

याद रक्खो—संसारके भोग पहले तो इच्छानुसार प्राप्त नहीं होते, प्राप्त भी अधूरे ही होते हैं और प्राप्त होकर निश्चय ही नष्ट हो जाते हैं; परंतु अनन्य इच्छा करनेपर भगवान् निश्चय ही प्राप्त होते हैं, इच्छानुसार कृपा, प्रेम या दर्शन देकर कृतार्थ करते हैं, वे सर्वत्र सदा पूर्णतासे परिपूर्ण हैं तथा प्राप्त होकर कभी बिछुड़ना उनके स्वभावसे विरुद्ध है।

याद रक्खो—मानवशरीर भोगोंके लिये नहीं मिला है। भोगोंके लिये तो अन्यान्य समस्त योनियाँ हैं ही। यह तो मिला है केवल परमशान्तिमय परमानन्दमय नित्य शाश्वत अखण्ड चिदानन्दमय भागवत-जीवनकी प्राप्तिके लिये। यह जीवन ही दिव्य-जीवन है—भगवत्प्राप्ति है। इसीको जीवनका परम लक्ष्य—एकमात्र लक्ष्य बनाकर इसीकी प्राप्तिके प्रयासमें सदा संलग्न रहना मानव-जीवनका परम कर्तव्य है। इस कर्तव्यसे विमुख मनुष्यका भविष्य निश्चय ही अत्यन्त अन्धकारमय है, भले ही वह (तथा जिस समाजमें वह रहता है—वह समाज भी) अपनेको समुन्नत, सुखी तथा ज्ञानोज्ज्वल स्थितिको प्राप्त समझे। पर उसकी यह समझ सर्वथा भ्रान्त है। उसकी बुद्धि उसे धोखा दे रही है!

याद रक्खो—जब तुम्हारे जीवनका लक्ष्य भोग होगा भगवान्

नहीं; विषय-सुख होगा भागवत-सुख नहीं; लौकिक विषयोंकी प्राप्ति होगा भगवान्‌की प्राप्ति नहीं—तब सहज ही भोगासक्ति, भोग-कामना, कामना-सिद्धिजनित लोभ, कामना-असिद्धिजनित क्रोध, ममता, अभिमान आदि दोष उत्पन्न होकर तुम्हारे सारे जीवनको भ्रान्त और अशान्त कर देंगे। तुम्हारी बुद्धि विपरीत निर्णय करनेवाली बन जायगी और भोग-परायण मन-इन्द्रियके इच्छानुसार विषयोंकी ओर तुम्हें प्रेरित करने लगेगी। उस समय तुम अधर्मको धर्म, अकर्तव्य-को कर्तव्य, बुरेको भला, विपत्तिको सम्पत्ति और अन्धकारको प्रकाश मानने लगोगे और इसके परिणामस्वरूप तुम्हारा जीवन तमोमय, अशान्तिमय, दुःखमय, चिन्तामय, ज्वालामय बन जायगा। परलोक भी बिगड़ जायगा, भगवान्‌की प्राप्ति तो होगी ही नहीं। तुम अशान्तिमय जीवन बिताते हुए अशान्तिमें ही मरोगे और आगे भी दुःखमय स्थितिको ही प्राप्त होते रहोगे।

याद रक्खो—मानव-जीवनके असली लक्ष्यका परित्याग करने-पर तुम्हारी यही दुर्दशा होगी। अतएव तुम तुरंत अपने जीवनका लक्ष्य स्थिर कर लो। वह परम और चरम लक्ष्य भगवान् हैं। और बड़ी सावधानीके साथ अपनी विचारधाराको, अपनी प्रत्येक चेष्टा और क्रियाको उसीकी सिद्धिके लिये जोड़ दो। तुम्हारा मानव-जीवन निश्चय ही सफल हो जायगा। जबतक जीओगे, बाहरी परिस्थिति कैसी भी हो, तुम सदा शान्ति-सुखका अनुभव करते रहोगे, सुखसे मरोगे और भगवान्‌को प्राप्त करके कृतार्थ हो जाओगे।

साधनमें शीघ्रताकी आवश्यकता

याद रक्खो——जिसको जल्दी यात्रा पूरी करके अपने घर है, जिसको पल-पलमें घरकी याद आती है और घरके लिये व्याकुलता बढ़ रही है, वह रास्तेके विलम्बको कैसे सहन करेगा ? वह न तो रास्तेमें किसीमें ममता करके किसीके मोहमें फँसेगा, न किसीसे जरा भी लड़-झगड़कर अपने समयको खोयेगा तथा अपने मार्गमें रुकावट पैदा करेगा और न कहीं इधर-उधर भटकेगा और अटकेगा ही। वह सबसे मेल रखता हुआ अपने लक्ष्यपर ध्यान रखते हुए सीधा अपनी राहपर चलता रहेगा। इसी प्रकार यदि तुम्हें जीवनके चरम तथा परम लक्ष्य श्रीभगवान्के धाम पहुँचना है, भगवान्को प्राप्त करना है तो इस बातको कभी न भूलकर सावधानी तथा शीघ्रताके साथ आगे बढ़ते चले जाओ।

याद रक्खो——तुम यहाँ जिस घरको अपना घर कहते हो, वह तुम्हारा घर नहीं है, रेलके डिब्बेके समान यात्रामें बैठनेका स्थान

है, या किसी समय रास्तेमें विश्रामके लिये किसी धर्मशाला या वेटिंग रूममें ठहरते हो, वैसे ही कुछ समयके लिये ठहरनेका स्थान है। तुम्हारा यह शरीर यात्रा-शरीर है और तुम्हारा जीवनयापन तथा तुम्हारी सारी क्रियाएँ चलना है। यदि तुम अपने लक्ष्यको—भगवान्को कभी न भूलते हुए सदा निर्लेप तथा सावधान रहकर भगवान्की ओर चलते रहोगे तो यह मानव-शरीर तुम्हें निश्चय ही वहाँ पहुँचानेमें समर्थ होगा; पर यदि तुमने यात्राको स्थायी निवास मान लिया, रास्तेमें बैठने या ठहरनेके स्थानरूप इस घरको अपना घर मान लिया, किसीमें ममता जोड़ ली और किसीसे द्वेष कर लिया और यदि इन्द्रियोंके भोगोंमें अटककर इधर-उधर भटक गये तो तुम्हारी यह यात्रा सफल तो होगी ही नहीं, तुम्हारे मानव-जीवनका उद्देश्य तो पूरा होगा ही नहीं, बल्कि उल्टे मार्गपर चलकर तुम भगवान्से और भी दूर पहुँच जाओगे।

याद रक्खो—यदि ममतावश तुम कहीं किसी प्राणी-पदार्थमें मोहित हो गये, भोगोंमें आसक्त हो गये तो बुरी तरह फँस जाओगे, फिर निकलना अत्यन्त कठिन हो जायगा। और यदि कहीं द्वेष करके लड़-झगड़ बैठे तो वैसे ही नयी विपत्तिसे घिर जाओगे, जैसे रेलके डिब्बेमें या राहमें कहीं किसीसे लड़ाई-झगड़ा हो जानेपर फौजदारीमें मुकदमा चल जाता है, रुपये खर्च होते हैं और जेलकी सजा भुगतनी पड़ती है। यात्रा ही नहीं रुकती, उल्टी विपत्तियाँ झेलनी पड़ती हैं, वैसा ही मानव-जीवनकी इस यात्रामें भी हो सकता है। अतएव न कहीं ममतामें बँधकर राग करो, न द्वेष करो, न किसीमें

रूप प्रभुको देख नहीं पा रहे हो। उधर तुम्हारी दृष्टि ही नहीं है, इसीसे तुम्हारे सामने सत्य छिपा है। तुम किसी भी क्षण दृष्टिको भीतर ले जाकर, अपने विचारोंके प्रवाहको प्रभुकी ओर मोड़कर उन्हें जान सकते हो।

याद रक्खो—प्रभुको जाननेकी तुम्हारी तीव्र इच्छा होनी चाहिये। इसके लिये तुम्हारे अंदर तड़प होनी चाहिये। फिर तुम केवल उन्हें जान ही नहीं लोगे, उन्हें देख भी लोगे और उनके साथ घुल-मिल भी जाओगे। उनके दिव्य लीलाक्षेत्रमें तुम्हारा सहज प्रवेश हो जायगा।

याद रक्खो—वे प्रभु सदा ही तुम्हारे हैं और तुम सदा ही उनके हो। तुम्हारा यह सम्बन्ध नित्य है, अच्छेद्य है; परंतु तुम इसे भूल रहे हो। इसीसे किसी छोटे-से क्षेत्रमें और छोटी-सी नाम-रूपकी सीमामें अपनेको बाँधकर उसी क्षेत्र तथा नाम-रूपके झगड़ेमें उलझे हो और उसीके कल्पित विकास-विनाश, लाभ-हानि, सुख-दुःख और अनुकूलता-प्रतिकूलताकी प्राप्तिमें दिन-रात विकारग्रस्त हुए छटपटा रहे हो। तुम्हारी मूर्खता ही इसमें हेतु है।

याद रक्खो—तुम चाहते हो—शाश्वत सुख-शान्ति। उस शाश्वत सुख-शान्तिका जो नित्य आधार है, जो अक्षय अनन्त भण्डार है, वह सदा तुम्हारे पास है; परंतु तुम उसे भुलाकर उससे दूर, बहुत दूर जाकर सुख-शान्तिका अनुसंधान कर रहे हो; तुम्हारा यह प्रयास वैसे ही सर्वथा मिथ्या और निश्चित असफल है, जैसे संतप्त बालूमेंसे तेल निकालना। तथापि तुम इतने मोहग्रस्त हो रहे

हो कि दिन-रात बालूके पेरनेमें ही लगे अपने जीवनको दुःखमय बनाते हुए बरबाद कर रहे हो। स्नेह-सुधा-सागर तुम्हारे अंदर ही लहरा रहा है, पर तुम्हारी मूर्खतासे वहाँ तुम्हें सूखा प्रतीत हो रहा है और तुम भटकते भीषण विषय-विष-ज्वालासे दग्ध हुए जा रहे हो।

याद रक्खो—तुम तनिक गहराईमें जाकर प्रभुकी ओर देखो, अपनेको उनकी ओर मोड़नेकी इच्छा करो। फिर तो उनकी सहज कृपा तुमपर बरस पड़ेगी और तुम सहज ही शीतल, शान्त, स्वच्छ, निर्मल, शाश्वत, शक्तिसमन्वित, परम मधुर और सुन्दर जीवनसे सम्पन्न हो जाओगे। तुम्हारे सभी संताप सदाके लिये नष्ट हो जायँगे; परंतु जबतक तुम उनकी ओरसे मुख मोड़े रहोगे, तबतक जलते ही रहोगे। न कोई प्राणी तुम्हें शान्ति दे सकेगा, न कोई पदार्थ या परिस्थिति ही।

याद रक्खो—ज्यों-ज्यों तुम संसारके इन अनुकूल प्रभुविमुख प्राणी-पदार्थ-परिस्थितियोंकी खोजमें आगे बढ़ोगे और ज्यों-ज्यों तुम्हें इनकी प्राप्ति होगी, त्यों-ही-त्यों तुम्हारी अशान्ति, तुम्हारी जलन, तुम्हारा संताप बढ़ता ही चला जायगा। यों ही न मिलनेकी हालतमें भी तुम अशान्ति, जलन और संतापसे ही पीड़ित रहोगे। इन प्राणी, पदार्थ, परिस्थितियोंकी आस्था, आशा, आकाङ्क्षा छोड़कर प्रभुकी ओर देखो। फिर सारी प्रभु-इच्छित अनुकूलता अपने-आप ही आकर तुम्हारे चरण चूमेगी और तुम्हारे संतापका और उसके कारणोंका सदाके लिये सर्वनाश हो जायगा।

भोगपदार्थोंकी स्थिति

याद रक्खो—संसारके भोगपदार्थोंकी वैसी ही स्थिति है, जैसी बच्चोंके खिलौनोंकी; जैसे बच्चे काँचकी रंग-बिरंगी गोलियोंसे, मिट्टी-पत्थर-धातुके खिलौनोंसे खेलते हैं, उनमें आसक्ति-ममता करते हैं, उनके छीने जाने या नष्ट हो जानेपर दुखी होते तथा रोते हैं, छीन लेने या तोड़ देनेवालोंपर क्रुद्ध होते हैं, उनसे लड़ते-झगड़ते हैं, अपमानको सहन न करके उसका बदला लेना चाहते हैं, ठीक वैसे ही बड़ी उम्रके तुमलोग मकान, जमीन, भोगपदार्थ, मान-सम्मान, नाम-इज्जत आदिके लिये व्यवहार-बर्ताव तथा अनुभव करते हो। बच्चोंका अज्ञान अविकसित है, इससे उनको दीर्घकालतक स्मृति नहीं रहती। वे लड़-झगड़कर जल्दी प्रसन्न हो जाते हैं, अपमानको भी जल्दी भूल जाते हैं। बड़ी उम्रके तुमलोगोंका अज्ञान विकासको प्राप्त रहता है, इसलिये तुम जीवनभर स्मरण रखते हो और इसीलिये जन्मान्तरमें भी उसके संस्कारोंको साथ लिये जाते हो।

याद रक्खो—यहाँका जीवन तुम्हारी लंबी यात्राका एक मार्ग है, घर-द्वार आदि सब रेलके डिब्बे या रास्तेकी सरायके समान हैं। यहाँकी चीजें मार्गके निर्वाहके लिये हैं और यहाँके सम्बन्ध यात्रियोंके यात्राकालके परस्पर कल्पित सम्बन्धके अनुसार हैं। न यहाँके काम तुम्हारे काम हैं, न यहाँका घर तुम्हारा स्थायी घर है, न यहाँकी वस्तुएँ तुम्हारी अपनी हैं और न यहाँके सम्बन्ध ही तुम्हारे स्थायी सम्बन्ध हैं। ये सब कामचलाऊ हैं, अनित्य हैं और कल्पनामात्र हैं। इनके साथ वास्तविक सम्बन्ध

जोड़कर इनमें ममता-आसक्ति कर लेनेमे ही सारी फँसावट होती है, एक दुःखके बाद दूसरे नये दुःखकी परिस्थिति आती रहती है तथा एकके बाद दूसरा नया बन्धन उत्पन्न होता रहता है। रास्तेमें मुसाफिर एक दूसरेसे लड़ बैठें, द्वेष-वैर करने लगें तो क्लेश-कलह-दुःख तथा कहीं-कहीं मुकदमा चल जानेपर नया दुःख—बन्धन हो जाता है, यात्रामें रुकावट आ जाती है; वैसे ही ममता-आसक्ति करनेपर भी राहमें रुकावट तथा बन्धन होता है। अतएव इस जीवनको मुसाफिरका जीवन समझकर अपने एकमात्र लक्ष्य परमानन्दरूप भगवान्की प्राप्तिको सामने रखते हुए सावधानीके साथ अपने मार्गपर चलते रहो। न किसी प्राणी-पदार्थ-परिस्थितिके साथ राग या ममत्व करो तथा न किसीके साथ द्वेष या परत्व करो। सेवा करो, प्रेम करो, सुख दो—सेवा चाहो मत, दूसरेको प्रीति करनेके लिये बाध्य न करो—सुखकी किसीसे आशा न रक्खो और यहाँके तमाम भोगपदार्थोंको क्षणभङ्गुर, अनित्य, केवल देखनेमें सुन्दर—फलमें असुन्दर समझकर उनका यथायोग्य उपयोग करो; पर करो इन्हें खिलौने समझकर, न कि अपनी वस्तु समझकर।

याद रक्खो—यहाँ जो वस्तु, प्राणी, परिस्थिति प्राप्त नहीं हैं, उनके लिये दुःख न करो और न उनके लिये लुभाओ, ललचाओ। जो प्राप्त हैं, उनका निरन्तर भगवत्सेवामें प्रयोग करो। प्रत्येक परिस्थितिसे लाभ उठाओ और लाभ उठानेका यही अर्थ है कि उन प्राणी-पदार्थ-परिस्थितिको भगवत्सेवाके उपयोगी बनाकर सदा-सर्वदा अपनेको सेवामय बनाये रक्खो। तुम्हारे जीवनका

प्रत्येक श्वास, प्रत्येक विचार, प्रत्येक क्रिया तथा प्रत्येक पदार्थ भगवान्‌की सेवामें ही लगना चाहिये। तभी उनकी सार्थकता है। नहीं तो 'व्यर्थ' ही नहीं, वे 'अनर्थ'-रूप हैं।

याद रक्खो—जीवनका जो क्षण, जो विचार, जो कार्य भगवान्‌की सेवामें लगता है, वह वास्तविक 'अर्थ' है—यह अर्थ ही परमार्थ है। जो निर्दोष भोगकी प्राप्ति तथा संयोगमें लगता है, वह 'व्यर्थ' है और जो दोषयुक्त अवैध भोगोंके भोग तथा प्राप्तिके साधनमें लगता है, वह सर्वथा 'अनर्थ' है। 'अनर्थ'का सर्वथा परित्याग करो, उसे विल्कुल छोड़ दो। 'व्यर्थ'का भी त्याग करो; क्योंकि जीवन बरबाद होता है और केवल 'अर्थ'का सेवन करो, जीवनको सर्वतोभावेन 'परमार्थ' में लगाओ।

याद रक्खो—इसीसे भगवान्‌के द्वारा गीतामें प्रयुक्त चतुर्विध आर्त्त, जिज्ञासु, अर्थार्थी और ज्ञानी भक्तोंकी एक महात्माने ठीक क्रमसे यह व्याख्या की है कि जो परमार्थरूप भगवान्‌की प्राप्तिके लिये अत्यन्त आतुर है, परम दुखी है—विल्कुल आर्त्त होकर रो रहा है, वह 'आर्त्त' भक्त है। जो प्रत्येक प्राप्त साधन-सामग्रीसे तथा बुद्धि-विद्या-संत आदिसे केवल भगवान्‌का ही संधान पूछता है, वह 'जिज्ञासु' है। जो केवल भगवान्‌रूप 'अर्थ'के लिये ही अनन्य रूपसे तीव्रतम कामना करता है, वह 'अर्थार्थी' है और जो भगवान्‌का यथार्थ संधान प्राप्त कर चुका है, वह 'ज्ञानी' है। इसलिये तुम सदा सच्चे अर्थमें 'सच्चे अर्थ'के लिये 'अर्थार्थी' बनो। भगवान् ही वह सच्चा अर्थ हैं।

मनुष्य-शरीरकी महत्ता

याद रक्खो—महान् पुण्यके फलस्वरूप तथा महती भगवत्-कृपासे तुम्हें यह मनुष्य-शरीर प्राप्त हुआ है। यह मानव-शरीर संसाररूपी दुःखसमुद्रको पार करनेके लिये सुन्दर सुखमय नौकाके समान है। अतएव जबतक यह किसी चट्टान आदिसे टकराकर टूट नहीं जाती, अर्थात् जबतक यह शरीर बना हुआ है, मृत्यु नहीं हो जाती, तभीतक इसके द्वारा संसार-सागरको पार कर लेना चाहिये।

याद रक्खो—जन्म-मरणरूपी यह संसार सर्वथा अनित्य, अपूर्ण अतएव दुःखका समुद्र है। जिस प्रकार सागरमें ऊँची-नीची तरंगें उठा-मिटा करती हैं, उसी प्रकार संसारमें ऊँचे-नीचे शरीरोंकी उत्पत्ति तथा नाश हुआ करता है। इन सारे शरीरोंमें एक मनुष्य-शरीर ही ऐसा है, जिसमें साधनके द्वारा जीव इस जन्म-मरणरूप घोर दुःख-सागरसे पार जा सकता है; परंतु यह शरीर है अत्यन्त क्षणभङ्गुर। कमलके पत्रपर पड़ी हुई जलकी बूँद जैसे ज़रा-सा

हवाका झोंका लगते ही गिर पड़ती है, वैसे ही इस शरीरका अन्त भी क्षणमात्रमें हो जाता है। अतएव इसके नाशसे पूर्व ही साधनमें सफलता प्राप्त कर लेनी चाहिये।

याद रक्खो—तुम शरीर नहीं, आत्मा हो। आत्मा जन्म-मरणसे रहित नित्य सत्य है। इसमें न उत्पत्ति है न विनाश, न सुख है न दुःख। प्रकृतिके साथ तादात्म्य हो जानेसे यानी कारण, सूक्ष्म तथा स्थूल शरीरसे आबद्ध हो जानेसे उसमें जन्म-मरणका—सुख-दुःखका आरोप हो गया है।

याद रक्खो—स्थूल शरीर पञ्चभूतोंका कार्य होनेसे जड है। इसमें चेतनता दीखनेका कारण है इसके भीतर रहनेवाला सूक्ष्म शरीर, जो इसे चेतना देता है। वस्तुतः वह सूक्ष्म शरीर भी सत्रह या उन्नीस (पञ्चप्राण, पाँच ज्ञानेन्द्रिय, पाँच कर्मेन्द्रिय, मन तथा बुद्धि अथवा मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार) तत्त्वोंसे बना होनेके कारण स्वभावसे जड ही है, पर चेतन आत्माका प्रकाश लेकर वह स्वयं चेतन बना हुआ स्थूल शरीरमें चेतनाका उदय कराता है।

याद रक्खो—आत्मस्वरूपकी विस्मृति या भगवदंश-स्वरूपसे च्युति ही अज्ञान है। यह अज्ञान ही 'कारण शरीर' है। नित्य सत्य आत्मामें जन्म-मरण न होनेपर भी, आत्मामें भोक्तापन न होनेपर भी अज्ञानके कारण वह अपनेको जन्म-मरणवाला तथा भोगोंका भोक्ता मानता है; यही उसका 'जीव'-स्वरूप है और जबतक वह अपनेको जीव मानता रहेगा, तबतक जन्म-मृत्युका चक्र या भवप्रवाह चालू

याद रक्खो—अज्ञानवश शरीरके धर्मको अपनेमें कल्पित करके जीवमात्रको प्राप्त आत्मा स्थूल शरीरके जन्म-मरणको अपना जन्म-मरण, जन्मके कष्टको कष्ट, मृत्युकी यातनाको यातना, प्राणोंकी भूखको भूख, शरीरकी अपवित्रतासे अपवित्रता, शरीरकी हानिसे अपनी हानि मानता है और इनके निवारणका उपाय सोचता है। स्वयं सर्वथा सङ्गरहित होकर भी राग-द्वेषको अपनाकर दुखी होता है, सुखस्वरूप होकर भी शरीरके दुःखसे दुखी होता है। यही अज्ञान है और इसी अज्ञानसे यह संसार-समुद्र बना हुआ है।

याद रक्खो—इस अज्ञानका नाश करना—इस संसार-समुद्रसे पार होना ही तुम्हारा काम है, इसीलिये मानव-शरीर मिला है। इसलिये तुमको चाहिये कि तुम लोकभ्रमसे—प्रापञ्चिक हानि-लाभसे मन हटाकर अन्तःकरणको शुद्ध कर लो, भगवान्‌के भजनके द्वारा अपने सत्य स्वरूपको समझो और अपने आत्मस्वरूपमें स्थित होकर इस असार तथापि भीषण भव-समुद्रसे पार हो जाओ। तुम संसार या शरीर नहीं हो। तुम मन, बुद्धि, इन्द्रिय नहीं हो, न ये सब तुम्हारे हैं। ये सब तुमसे भिन्न हैं; क्योंकि ये सभी दृश्य हैं। तुम तो सबके द्रष्टा हो। वास्तवमें तो एक भगवान् या आत्माके अतिरिक्त अन्य किसीकी सत्ता ही नहीं, इस सत्यको प्राप्त करके कृतकृत्य हो जाओ। निश्चय मानो, तुम जड अनित्य देह नहीं, सच्चिदानन्द आत्मा हो।

(४) सेवामें आत्मसंयम, (५) सेवामें उत्साह, (६) सेवा प्रीति और (७) विनयभाव ।

याद रक्खो—पापमें सहायता-सहयोग देना सेवा नहीं है दूसरोंको सतानेवाले, खूनी, डकैत, व्यभिचारी, पराया स्वत्व हरण करनेवाले—ऐसे लोगोंकी उनके इन कामोंमें सहायता करना सेवा नहीं है । इन कामोंसे तो कर्ताका बड़ा अनिष्ट होता है और किसीके अनिष्टसाधनमें सहायता करना सेवा नहीं, वह तो पापका समर्थन है ।

याद रक्खो—सेवकमें त्याग तथा विनयका होना परमावश्यक है । विना त्याग सेवा नहीं होती और विनय हुए विना अभिमान उत्पन्न होता है । वह जिसकी सेवा करता है, उसको नीचा और अपनेको ऊँचा मानने लगता है । त्याग और निरभिमानता हुए विना बदला चाहना, कृतज्ञताकी आकाङ्क्षा करना, कृतज्ञ न होने या बदला न चुकानेपर नाराज होकर उसे कृतघ्न मानना, उससे द्वेष करना आदि दोष उत्पन्न होकर सेवाके पवित्र स्वरूपको ही नष्ट कर देते हैं ।

याद रक्खो—सेवक जिसकी सेवा करता है, न तो उसके पूर्व-इतिहासको देखता है, न भविष्यमें उसका कैसा बर्ताव होगा, यह देखता है । वह तो उसकी वर्तमान निर्दोष आवश्यकताको देखता है और सीधे-सादे तौरपर अपने साधन तथा शक्तिके अनुसार उसकी सेवा करता है ।

कामना सेवाकी शक्ति बढ़नेकी होती है, उसका अहंकार विनम्रतामें परिणत हो जाता है और वह सेव्यको भगवान्‌के रूपमें और अपनेको नित्य सेवकके रूपमें देखता है ।

याद रक्खो—सेवक न मान-बड़ाई चाहता है, न दूसरोंपर हुकूमत करना चाहता है, न वह किसीको अपना-पराया मानकर राग-द्वेष रखता है, न किसीको अज्ञानी-मूर्ख मानता है या अपनेसे नीचा मानता है, न किसीकी निन्दा-चुगली करता है और न कभी किसीसे अपने लिये आराम, अच्छे भोजन या सेवाकी ही आकाङ्क्षा करता है ।

याद रक्खो—सच्चे सेवकमें प्राणी-मात्रकी सेवाकी भावना हज रहती है । वह दयालु, निर्मलमन, धैर्य-शील, चतुर, उद्यमी, द्धालु, नित्य सत्कर्मपरायण, चरित्रवान्, संयतेन्द्रिय, अत्यन्त विनम्र या दूसरोंके हितके लिये ही जीवन धारण करनेवाला होता है । ह यथासाध्य सेवाको गुप्त रखना चाहता है । सेवा ही उसके जीवनका स्वरूप होता है ।

याद रक्खो—सेवा निष्काम तथा विनम्र चित्तमें प्रकट भगवान्‌का विशुद्ध तथा मधुर प्रसाद है । वह कोई लेन-देनका व्यापार नहीं है और न अभिमान उत्पन्न करके दूसरोंको नीचा दिखानेवाला सदोष प्रयत्न है ।

सो अनन्य जाकें असि मति न टरइ हनुमंत ।
मैं सेवक सचराचर रूप स्वामि भगवंत ॥

विवेकसे अनासक्ति

याद रक्खो—जो मनुष्य यह जान जाता है कि वह जिस मकानमें रहता है उसमें नीचे-ऊपर, चारों ओरकी दीवालोंमें बारूद भरी है और वह जब कभी भी फट सकती है, वह क्या एक क्षण भी उस मकानमें सुखका अनुभव करके टिक सकेगा, क्या उस मकानमें उसकी आसक्ति रह जायगी ? इसी प्रकार जब यह मालूम हो जाता है कि इस सुन्दर दीखनेवाली स्वादिष्ट मिठाईमें संखिया विष मिला हुआ है तो क्या कोई उसे खाना चाहेगा ? क्या उसे तुरंत छोड़ना नहीं चाहेगा ? इसी प्रकार सदसद्विचारके

द्वारा, विवेकके द्वारा जब यह निश्चयपूर्वक विश्वास हो जाता है कि संसारके सभी भोग अनित्य दुःख-ज्वालामय और अन्तमें विषके समान मारनेवाले हैं तो क्या मनुष्य इन भोगोंमें आसक्त रह सकता है ? इस बातको विवेकसे समझो और संसारके तमाम भोगोंको विषवत् जानकर इनसे अनासक्त बनो ।

याद रक्खो—विवेक होनेपर वैराग्य अवश्य होगा ही । भोग दुःख-ज्वालामय, विषमय हैं—यह ठीक जान लेनेपर उनमें राग रह नहीं सकता । फिर उन्हें मनुष्य तुरंत छोड़ देना चाहेगा । उसे फिर उनमें रहते भय लगेगा । वह चाहेगा, जितनी जल्दी छुटकारा हो जाय, उतना ही अच्छा है । इस प्रकार भोग-जगत्से छुटकारा पानेकी इच्छा ही 'मुमुक्षा' है । यह जिसमें है वही 'मुमुक्षु' है । इसीको भगवत्प्राप्तिकी इच्छा कहते हैं । इस इच्छाके जाग्रत् तथा तीव्र हो जानेपर मोक्ष या भगवान्‌की प्राप्ति तुरंत हो जाती है । भगवान्‌की प्राप्तिमें विलम्ब इसीलिये हो रहा है कि उसकी इच्छा तीव्रतम और अनन्य तो है ही नहीं, अभी पूरी जागी भी नहीं है ।

याद रक्खो—जबतक भोगोंमें सुख दिखायी देता है, भोगोंमें सुख है—इस प्रकारकी आस्था है, भोगोंके लिये जी ललचाता है, दूसरोंके पास भोगोंको देखकर उनके भाग्यकी सराहना होती है, उनसे ईर्ष्या होती है और वैसे ही भोग प्राप्त करनेके लिये मनमें व्याकुलता होती है, तबतक विवेकके द्वारा भोगका असली स्वरूप तुम्हारे सामने प्रकट हुआ ही नहीं । वह विषभरी मीठी

मिठाई है, तुमने जाना ही नहीं। चाहे तुम्हारा नाम भक्त हो, महात्मा हो, संत हो, महापुरुष हो, त्यागी-वैरागी हो या कर्मयोगी हो। सच तो यह है कि जबतक तुम भोगोंमें सुख मानकर मनमें भोग-लालसाका पोषण कर रहे हो, तबतक तुम भोगोंके ही गुलाम हो। इसका दूसरा अर्थ है—तबतक तुम अगाध दुःख-सागरमें ही गोते खाते रहोगे!

याद रक्खो—यदि तुम्हें मानव-जीवन सफल करना है, सच्ची सुख-शान्तिको प्राप्त करना है तो भोगोंकी ओरसे मुँह मोड़कर अपने जीवनका मुख भगवान्‌की ओर कर दो। फिर यदि तुम्हारे पास भोग रहेंगे तो वे तुम्हारी सेवाके लिये तुम्हारे पीछे-पीछे चलनेवाले होंगे। तुम उनकी ओर ललचाई दृष्टिसे नहीं देखोगे। तुम्हारी आँख रहेगी भगवान्‌की ओर, तुम्हारे पैर आगे बढ़ेंगे भगवान्‌की ओर और तुम्हारा चित्त लगा रहेगा भगवान्‌की ओर।

याद रक्खो—इस अवस्थामें जो भोग तुम्हारे पीछे-पीछे चलेंगे, वे भी भगवत्पूजाकी सामग्री बनकर धन्य हो जायँगे। जिन भोगोंमें मनुष्यकी आसक्ति है और जो मनुष्यके भोग्य हैं, वे स्वयं नरकरूप हैं और भोगनेवालेको भी नरकमें ले जाकर दुःखाग्निमें पकानेवाले हैं। भोगोंसे विरक्ति करके भगवान्‌में अनुरक्त हो जाओ तो तुम्हारा जीवन भी सार्थक होगा। और फिर, यदि कोई भोग तुम्हारे साथ रह सकें तो वे भी पवित्र, सार्थक हो जायँगे।

विचारोंके अनुसार मानवका स्वरूप

याद रक्खो—तुम अपने मनमें जिस प्रकारके विचारोंको स्थान दोगे, जिस प्रकारके विचारोंका पोषण करोगे, वही तुम्हारा आदर्श होगा और तुम सहज ही वैसे ही बनते चले जाओगे। तुम यदि यह निश्चय करोगे—सदा इसी प्रकारके विचारोंका पोषण करते रहोगे कि 'ईश्वर सर्वशक्तिमान् हैं, वे मेरे परम सुहृद् हैं, मैं उनका अपना हूँ, अतएव उनके सहज सौहार्दसे मेरे जीवनमें त्याग, प्रेम, आनन्द, पुण्य, सफलता, दया, परदुःख-कातरता और सबमें भगवान्को देखकर सबकी सेवाके भाव सदा जाग्रत् रहेंगे। मेरा जीवन ऐसा ही बन रहा है और बनेगा। मैं जहाँ रहूँगा, वहीं मेरे द्वारा वातावरणमें इन्हीं सद्भावोंका प्रसार होगा। लोगोंके ऐसे सत्-चित्तके निर्माणमें मैं सहज सहायक बनूँगा।' तो सचमुच तुम

ममता ही बन्धन है

याद रक्खो—संसारके प्राणी-पदार्थोंमें ममता ही बन्धन है और ममताका सर्वथा अभाव ही मुक्ति है। ममता न होनेका अभिप्राय है संसारमें कभी, किसी भी वस्तुमें, परिस्थितिमें, प्राणीमें जिसका मेरापन न हो। जिसके कुछ भी अपना नहीं है, जो सर्वथा अकिञ्चन है, वही ममता-बन्धनसे रहित मुक्त है।

याद रक्खो—सांसारिक प्राणी-पदार्थोंकी ममतासे मुक्त पुरुषसे भगवान् स्वयं ममत्व करते हैं। वह भगवान्को अत्यन्त प्रिय होता है। वही भगवत्प्रेमी भगवान्का सहज भजन करनेवाला है। जिनके मनमें जन्म, ऐश्वर्य, विद्या, परिवार, धन, बुद्धि, मत आदिमें

ममता होती है, वे तो इनके द्वारा शरीर तथा नामके अभिमानको ही पुष्ट करते हैं। वे भजन-परायण नहीं हो सकते।

याद रक्खो—यथार्थरूपसे भजन करनेमें समर्थ वे ही अकिञ्चन पुरुष होते हैं जिनमें किसी भी प्राणी, पदार्थ या परिस्थितिमें तनिक भी ममताका लेश नहीं रह गया है; क्योंकि भगवान् अकिञ्चनके सर्वस्व हैं और अकिञ्चनसे ही मिलते हैं। इसीलिये उनको 'अकिञ्चन-गोचर' कहा गया है।

याद रक्खो—ममता ही दुःखोंकी जड़ है। जिस वस्तु या प्राणीमें तुम्हारी ममता नहीं होती, उसके नष्ट हो जाने या मर जानेपर तुम जरा भी दुखी नहीं होते, चाहे वह दूसरेकी दृष्टिमें कितनी बहुमूल्य या महान् प्रिय हो। पर जहाँ ममता है, वहाँ जरा-सा भी उसका क्षय या उसके नाशकी सम्भावना ही दुःखदायी बन जाती है और यह निश्चय है कि संसारकी कोई भी वस्तु या प्राणी तुम्हारा है नहीं। तुमने मिथ्या ही उनमें ममत्व कर रक्खा है। जब तुम मरोगे, तब कोई भी ममताका पदार्थ या प्राणी तुम्हारा नहीं रहेगा। सभीसे ममताका सम्बन्ध बलात्कारसे छूट जायगा; परंतु उस सम्बन्धके छूटते समय तुम्हें अत्यन्त दुःख होगा।

याद रक्खो—यदि तुम पहलेसे ही सब प्राणी-पदार्थोंसे ममताका सम्बन्ध तोड़कर आसक्तिसे मुक्त हो जाते हो तो तुम्हारे दुःखकी सम्भावना ही नष्ट हो जाती है। फिर तुम्हें न तो मरणकालमें दुःख होगा, न उसके बाद ही।

परलोकको घोर दुःखमय बना देते हैं। इन दुर्गुणों, दुराचारों तथा दुष्ट वृत्तियोंसे बचना चाहते हो तो निरन्तर भगवान्‌का स्मरण करो। भगवान्‌का स्मरण करते हुए समस्त वैध कार्य भगवत्-सेवाके रूपमें करने लगो, तब ये सारी असत् वृत्तियाँ नष्ट हो जायँगी, जीव मात्रमें निरन्तर भगवान्‌के दर्शन होंगे और तुम्हारा प्रत्येक कार्य भगवान्‌की पूजा बन जायगा।

याद रक्खो—प्रत्येक जीवमें भगवान् बस रहे हैं, प्रत्येक जीव भगवान्‌का शरीर है, अथवा भगवान् ही प्रत्येक जीवके रूपमें प्रकट हो रहे हैं। यह निश्चय करके प्रत्येक जीवका सम्मान करो, प्रत्येक जीवको सुख पहुँचाओ और प्रत्येक जीवका हित-साधन करो। किसीको हीन मत समझो, किसीको नीचा मत समझो। हीनता, दीनता, नीचापन समझना चाहो तो अपनेमें समझो और है भी सचमुच यही बात।

याद रक्खो—जो भगवान्‌के सामने अपनेमें हीनता-दीनता समझकर सदा नत रहता है, उसीपर भगवान्‌की कृपा-वर्षा होती है। भगवान्‌को दैन्य प्रिय है और अभिमान अप्रिय। वे अभिमान-को चूर्ण करते हैं और दीनको अपनाते हैं, भगवान् जिसको अपनाते हैं, वही वास्तवमें महान् भाग्यशाली और शुभ चरित्रवान् है। जो भोगोंका गुलाम है, जिसपर अनित्य तथा दुःखयोनि भोगोंका आधिपत्य है, वह अत्यन्त अभागा तथा पापजीवन है। वह यहाँ और वहाँ केवल दुःख ही पैदा करता है और दुःख ही भोगता है।

याद रक्खो—जो स्वयं अभिमानसे रहित और दूसरोंको मान देनेवाला है, स्वयं आशासे रहित और दूसरोंकी आशाओंको यथासाध्य पूर्ण करनेवाला, अपने दुःखको दुःख न मानकर दूसरेके सुखके लिये सब प्रकारके दुःखोंको वरण करनेवाला है और अपने अधिकारका त्याग करके दूसरोंके अधिकारकी रक्षा करनेवाला है; वही वस्तुतः सबमें भगवान्को देखकर सबकी सेवा करनेवाला है। 'सबमें भगवान् ही हैं'—यों केवल मुँहसे कहनेवाला नहीं।

याद रक्खो—जो सबमें भगवान् जानकर, भगवान्का नित्य अखण्ड स्मरण करते हुए भगवान्की सेवाके लिये ही सब काम करता है, वही वास्तवमें परम पुण्यवान्, महान् सौभाग्यशाली, यथार्थ बुद्धिमान्, सर्वसद्गुणविभूषित, सदा सुसम्पन्न और सम्पूर्ण सद्वृत्तियोंका समुद्र बन जाता है। वह प्रतिक्षण, अपने जीवनके प्रत्येक स्तरसे और प्रत्येक चेष्टासे समस्त जगत्में दैवी सम्पत्तिका, भगवद्-भावोंका, स्वयं भगवान्का ही वितरण करता रहता है। उसीका जीवन सफल है, वही धन्यजीवन है।

याद रक्खो—ऐसा आदर्श पुरुष स्वयं ही धन्यजीवन नहीं होता, वह अपने जन्म और जीवनसे अपने देशको, धर्मको, जातिको तथा माता-पिताको भी धन्य कर देता है और युगोंतक वह जन-जनके जीवनको उच्च स्तरपर पहुँचानेवाला परम आदर्श

जीवनका उद्देश्य भगवान्

याद रक्खो—जबतक तुम्हारे जीवनका एकमात्र उद्देश्य भगवान् न होंगे, जबतक तुम भगवान्‌के सम्मुख होकर उनको प्राप्त करनेके साधनोंको न स्वीकार कर लोगे और जबतक तुम उन साधनोंको क्रियारूपमें परिणत न कर दोगे, तबतक तुम कभी भी, किसी भी स्थितिमें शान्ति-सुख-संतोषके दर्शन नहीं कर सकोगे।

याद रक्खो—अपूर्ण, अनित्य और परिवर्तनशील जगत्प्रपञ्चके प्राणी, पदार्थ, परिस्थितिमें कभी शान्ति-सुख हैं ही नहीं; उनमें निरन्तर अपूर्णताका दुःख, नष्ट हो जानेका दुःख और बदल जानेका दुःख लगा ही रहता है। सच्चा सुख एकमात्र नित्य निरतिशय परिपूर्णतम, अविनाशी, सदा अखण्ड एकरस श्रीभगवान्‌में ही है। अतएव उन्हींको जीवनका लक्ष्य बनाकर, उन्हींकी प्राप्तिके साधनोंको स्वीकारकर तदनुसार जीवन बनाओ।

याद रक्खो—कोई भी मनुष्य किसी स्थानपर पहुँचना चाहे तो उसके लिये तीन बातें परमावश्यक हैं—जहाँ पहुँचना है, उसको याद रक्खे; जिस रास्तेसे वहाँ पहुँचा जा सकता है उसी रास्तेको अपनावे और उसी रास्तेपर चलता रहे। लक्ष्य-स्थान याद

न रहा, तब तो कुछ भी नहीं होगा। वह जायगा ही कहाँ। लक्ष्य याद भी रहा, पर यदि विपरीत—उलटे मार्गको स्वीकार कर लिया, तब भी वहाँ नहीं पहुँच सकता, एवं यदि ठीक रास्तेपर होनेपर भी चले नहीं—रुका ही रहे, तब भी पहुँचना सम्भव नहीं। अतएव लक्ष्यको भूलो मत, निरन्तर याद रक्खो; लक्ष्यसिद्धिके साधनको स्वीकार करो और उन साधनोंको अपनी शक्तिके अनुसार सावधानीसे करते रहो।

याद रक्खो—भगवान्की ओर मुख करके उनके मार्गपर चलना आरम्भ कर दोगे तो जितना ही आगे बढ़ोगे उतनी ही चलनेकी शक्ति बढ़ेगी, उतने ही अच्छे-अच्छे सदा सहायता तथा सेवा करनेवाले प्रिय साथी मिलेंगे, उत्तरोत्तर उत्तम सुखमय मार्ग मिलेगा, प्रकाश मिलेगा, स्वस्थता मिलेगी, दैवी-सम्पत्तिपर अधिकार होता जायगा और सहज ही सच्चे शान्ति-सुख बढ़ते रहेंगे; क्योंकि वह मार्ग ही ऐसा है, जिसपर दैवी-सम्पदासम्पन्न पुरुष ही जाते हैं और वहाँ उत्तरोत्तर अधिक-से-अधिक दैवी-सम्पत्तिका ही आदान-प्रदान चलता है।

याद रक्खो—भगवान्से विमुख होकर भोग-जगत्की ओर मुख करके उसके मार्गपर चलोगे तो जितना ही आगे बढ़ोगे, उतनी ही सात्त्विकी शक्तिका ह्रास होगा, उतने ही नीच नराधम, सदा सताने तथा लूटनेवाले चोर, ठग, लुटेरे, बदमाशोंका सङ्ग मिलेगा, उत्तरोत्तर दुःखमय मार्ग मिलेगा, कंकड़-पत्थर-काँटे-गड्ढे मिलेंगे, अन्धकार मिलेगा, मानसिक और शारीरिक

शत्रु। विनयीके कहीं गिरनेपर लोग उसे उठाने दौड़ते हैं तो अभिमानीको धक्के और ठोकर मिलते हैं। विनयीको कहीं अपमान-तिरस्कारका अनुभव नहीं होता; क्योंकि वह अपमान-तिरस्कारको कुछ समझता ही नहीं और अभिमानीको वार-वार अपमान-तिरस्कारकी चोट लगती रहती है। कोई भी स्वाभाविक आकृति, चाल तथा शब्द ही उसपर मर्माघात करने लगते हैं। ये सब विपत्तियाँ अभिमानीकी अपनी बुलायी होती हैं और वे सदा उसके साथ लगी रहती हैं। उनके संगी-साथी तथा परिवारकी वृद्धि होती रहती है। पर विनयीके पास ऐसी दैवी-सम्पदाका सुदृढ़ किला रहता है कि उसमें इन विपत्तियोंका कभी प्रवेश ही नहीं हो सकता।

याद रक्खो—विनयी पुरुषके द्वारा ही किसीका सेवा-सत्कार हो सकता है। अभिमानी तो अपनी ऐंठमें ही रहता है, वह अभिमानवश गुरुजनोंका भी अपमान कर बैठता है। इससे वह उनकी सद्भावना एवं आशीर्वादसे वञ्चित रह जाता है। शिक्षा ग्रहण करनेमें भी अभिमानसे बहुत बड़ी बाधा आती है; क्योंकि अभिमानी मनुष्य किसीसे कुछ भी पूछने-जाननेमें अपना अपमान समझता है, वह किसीको भी किसी विषयमें अपनेसे ऊँचा माननेको तैयार ही नहीं होता। वह भगवान्‌से भी अभिमानवश दूर ही रहता है। संतोंका भी तिरस्कार करता है। इसीसे भगवान् भी कुशल चिकित्सक वैद्यकी भाँति अभिमानीका अभिमान नाश करनेके लिये उसके साथ द्वेषकी लीला करते हैं और विनयीके दैन्यके कारण उसके प्रति स्नेह-लीलाका प्रकाश करते हैं।

याद रक्खो—विनयीके हृदयमें सदा शान्ति रहती है और अभिमानीका हृदय जलता रहता है। वह किसीकी भी उन्नति, प्रगति, उत्थान, समृद्धि तथा कीर्तिकी बात सुन लेता है तो उसे सह नहीं सकता और उसके हृदयकी द्वेषाग्नि बड़े वेगसे भड़क उठती है। उसी जलनको मिटानेके लिये यह ऐसे कुकर्म भी कर बैठता है जो उसकी उस आगको भीषण दुःखदावाग्नि एवं नरकानल बनाकर जलनको और भी तीव्र तथा भयानक कर देते हैं।

याद रक्खो—सच्चा विद्वान् तथा बुद्धिमान् भी वही है, जिसमें विनय है। विद्याका अवश्यम्भावी फल ही है विनयकी प्राप्ति और विनयके आते ही पात्रता तथा समृद्धि भी आ जाती है। इस प्रकार जो सुख-शान्ति प्रदान करनेवाली पात्रता एवं समृद्धिका सम्पादन कर लेता है, वही बुद्धिमान् है।

याद रक्खो—फलवाले वृक्ष झुक जाते हैं और अपने अमृत-स्वादी फलोंसे जन-जनको तुष्ट करते हैं, पर अफलवृक्ष सीधे तने खड़े रहते हैं और सबकी उपेक्षाके पात्र होते हैं। सब प्रकारके उत्तम लाभ विनयमें ही है। अतः तुम भी विनयी बनो और उससे सबको अपना बना लो।

याद रक्खो—विनय असली होना चाहिये, दिखावटी नहीं। दिखावटी विनय तो एक प्रकारका छल है जो अपनेको धोखा देता है। अतः दिखावटी विनय न करके असली आदर्श विनयका अर्जन तथा व्यवहार करो।

संसार रंगमंच

याद रक्खो—संसारमें इस शरीरसे तथा शरीरके सम्बन्धी प्राणी-पदार्थमात्रसे तुम्हारा वैसा ही सम्बन्ध है, जैसा रंगमंचपर मिन' करनेवाले अभिनेताका अपने स्वाँगसे, नामसे और वहाँके अन्यान्य नाम-रूपधारी अभिनेताओं तथा वहाँके कार्योंसे होता है।

याद रक्खो—जैसे वह अभिनेता उस रंगमंचपर अपनेको वही बताता है जो स्वाँग धारण किये है; वहाँ किसीको पिता, किसीको माता, किसीको पुत्र, किसीको मित्र, किसीको अपना, किसीको पराया बताकर व्यवहार करता है। वहाँ उसको राज्य भी मिल सकता है, पुत्र भी मर सकता है, वह रोता-हँसता भी है। वह अपने स्वाँगके अनुसार सभी रसोंका प्राकट्य करता है; पर वह कभी किसी कालमें भी वहाँकी किसी वस्तुको, किसी प्राणी-पदार्थको, किसी क्रियाको तथा अपने नाम-रूपको भी वास्तवमें सत्य नहीं मानता। वह जानता है, मैं इस पोशाक तथा नामको ग्रहण करके, ऐसे ही अन्यान्य खेल करनेवाले अभिनेताओंके साथ खेल करता हूँ। वैसे ही

तुम भी एक अभिनेता हो; तुम्हारे ये नाम-रूप केवल खेलनेको मिले हैं, ये तुम्हारे वास्तविक स्वरूप नहीं हैं।

याद रक्खो—रंगमंचपर मिले हुए सुख-दुःख, लाभ-हानि, मान-अपमान, धनप्राप्ति-धननाश, पुत्रप्राप्ति-पुत्रमरण, विजय-पराजय, प्रिय-अप्रिय, सिद्धि-असिद्धि, मित्र-शत्रु आदि केवल अभिनयमात्र हैं। वह अभिनेता इन सभी द्वन्द्वोंसे अपनेको सर्वथा परे तथा इन्हें खेलमात्र मानकर अपने अंदर इनसे निर्लेप रहता है। न कभी इनमें उसकी आसक्ति होती है न द्वेष, न ममता होती है न द्रोह, न इनकी कामना होती है न वासना। वह सारे कार्य अपने स्वाँगके अनुसार यथाविधि सुचारु-रूपसे करता हुआ भी निर्द्वन्द्व रहता है। वैसे ही तुम भी इस संसारमें सब कुछका केवल इस शरीर और नामसे ही सम्बन्ध मानकर यहाँ अभिनेताकी भाँति सारे काम भलीभाँति करते हुए भी निष्काम, अनासक्त—निर्लेप रहो।

याद रक्खो—कोई अभिनेता रंगमंचकी पहनी पोशाक, गहने आदिपर, या वहाँ बने हुए पुत्र, पत्नी आदिपर वस्तुतः अपना अधिकार करना चाहे या उन्हें अपना बतावे तो वह जैसे पागल या अपराधी माना जाता है और उसे यथाविधि शिक्षा या दण्ड दिया जाता है। वह वस्तु तो उसकी होती ही नहीं; क्योंकि वह कभी उसकी थी ही नहीं। वह तो खेलमात्रके लिये उसे मिली थी। वैसे ही इस संसारके प्राणी-पदार्थोंपर ममता करके जो उनका मालिक बनना चाहता है, उसको वे प्राणी-पदार्थ तो मिलते ही नहीं, वह उल्टा दण्डका पात्र होता है और दुःखी होता है।

याद रक्खो—जब अभिनेता रंगमंचपर स्वाँग धारण करके नहीं आया था, तबतक वह जैसे अपने स्वरूपमें था, वैसे ही धारण करके रंगमंचपर अभिनय करनेके लिये आनेपर भी वह स्वरूपमें ही है। केवल अपने प्रभुका बताया हुआ अभिनय कर लिये रंगमंचपर दूसरा नाम-रूप धारण करके आया है। इसी प्र तुम भी इस शरीर और नामको धारण करके प्रभुकी प्रीतिके खेल करने आये हो, इस बातको याद रखते हुए अपने स्वाँ अनुसार प्रभुप्रीत्यर्थ खेल करते रहो। अपनेको सदा प्रभुका आ पालन करनेवाला सेवक बनाये रक्खो। जबतक वे नाम-रूप दे संसारमें काम कराना चाहते हैं, तबतक अपने स्वाँगके अनुसार करते रहो। पर सदा यही दृढ़ अनुभव करते रहो कि इस का तथा जिनके साथ तुम्हारे इस कामको लेकर व्यवहार होता उनसे वस्तुतः तुम्हारा कोई भी सम्बन्ध नहीं है। तुम्हारा सम्ब तो केवल प्रभुसे है। वे तुम्हारे बहुत ही भले नित्य मालिक हैं अ तुम उनकी रुचिके अनुसार चलनेवाले नित्य सेवक हो।

याद रक्खो—प्रभुका सेवक वही है, जिसपर दूसरे किसीका—किसी भी प्राणी-पदार्थ-परिस्थितिका अधिकार नहीं है तथा जो प्र सेवाको छोड़कर किसी भी प्राणी-पदार्थ-परिस्थितिपर अपना अधिका नहीं मानता। ऐसा अनन्य सेवक ही प्रभुका यथार्थ सेवक है औ प्रभु भी उसीके अनन्य स्वामी हैं।

भगवान्में जोड़नेवाले प्राणि-पदार्थ ही परम हितैषी हैं

याद रक्खो—संसारके भोग परिवर्तनशील, अपूर्ण तथा विनाशी हैं, अतएव संसार-भोगोंमें आसक्त मनुष्योंको कभी सुख नहीं मिल सकता। वे सुख-दुःख, लाभ-हानि, मान-अपमान, स्तुति-निन्दा, प्रिय-अप्रिय, शुभ-अशुभ आदि द्वन्द्वोंके मोहमें फँसे हुए दिन-रात अशान्ति तथा चिन्तामें डूबे रहते हैं। एकमें अनुकूलताका अनुभव करते हैं, दूसरेमें प्रतिकूलताका। अनुकूलताकी प्राप्ति तथा प्रतिकूलताके विनाशके लिये अनवरत विचार और प्रयत्न करते रहते हैं और इसी मोहमें पड़े हुए वे पापकर्मोंमें संलग्न तथा पवित्र कर्मोंसे दूर रहने लगते हैं। भगवान्‌का भजन उनके लिये असम्भव-सी

वस्तु बन जाता है। उनका भोगपरायण जीवन भगवद्विमुख होकर नरक-स्वरूप बन जाता है और वे नरककीटके सदृश उसीमें रचे-पचे जीवनके अमूल्य क्षणोंको पापसंचय और उसके फलस्वरूप भविष्यके घोर पतनका साधन बनानेमें ही बिता देते हैं। संसारके चाहे प्रचुर भोग उन्हें मिल जायँ, अथवा वे सर्वथा भोग-रहित रहें—वे सदा ही बढ़ते रहते हैं—आत्म-पतन—आत्म-विनाशकी ओर ही!

याद रक्खो—जिनका जीवन भगवान्‌से जुड़ जाता है, जिनके जीवनकी गति भगवान्‌के सम्मुख हो जाती है, वे इन द्वन्द्वोंके फंदेसे निकल जाते हैं। वे जान जाते हैं कि इन द्वन्द्वोंका सारा सम्बन्ध केवल नाम-रूपसे है, शरीर और नामसे है—जो दोनों ही आत्मासे पृथक् केवल इस जन्मकी यात्राके लिये मिले हैं; उनके साथ होनेवाले किसी भी परिणाम और व्यवहारसे आत्माका अपना निजका वास्तविक कोई भी सम्बन्ध नहीं है। ऐसे द्वन्द्व-मोहसे मुक्त पुरुष ही वस्तुतः दृढ़ निश्चयके साथ भगवान्‌का भजन करते हैं।

याद रक्खो—भोगपरायण मनुष्योंको चार चीजें मिलती हैं—अपार अशान्ति, अनवरत दुःख, पापाचरण और मरणोत्तर नरक एवं आसुरी योनियोंकी प्राप्ति। इसके विपरीत भगवत्परायण पुरुषोंको निर्मल शान्ति, उत्तरोत्तर बढ़ता हुआ सुख, पुण्यकर्मोंका आचरण और मरणोत्तर सद्गति या भगवत्प्राप्ति।

याद रक्खो—मनुष्य-जीवन यदि भगवत्प्राप्तिके साधनमें न

लगाकर—भगवान्‌के सम्मुख न होकर कामोपभोगपरायण हो गया तो वह पशु-जीवनसे भी अधिक बुरा है। पशु आदि योनियोंमें जीव कर्मफल भोगकर क्रमशः कर्म-ऋणसे मुक्त होता है। परंतु भोगपरायण मनुष्य तो नित्य नये पापकर्मोंका संग्रह करके अपने भविष्यका विनाश करता है। मनुष्यकी बुद्धि भोगपरायण होकर जितनी काम, क्रोध, लोभ आदि दोषोंको बढ़ाती तथा उनके फलस्वरूप पतन कराती है, उतनी और वैसी बुद्धि पशु आदिमें होती ही नहीं। मनुष्यकी बुद्धि ही तामसभावापन्न होनेपर भयंकर-से-भयंकर पापोंकी नयी-नयी योजनाएँ बनाती एवं उनके अनुसार जीवनका निर्माण करती है।

याद रक्खो—वह सम्पत्ति सम्पत्ति नहीं है, वह सुख सुख नहीं है, वह सौभाग्य सौभाग्य नहीं है, वह बुद्धि बुद्धि नहीं है, वह कर्म कर्म नहीं है, वह आत्मीय आत्मीय नहीं है और वह पदार्थ पदार्थ नहीं है, जो भगवान्‌से विमुख करते हैं। असलमें भगवान्‌से विमुख करनेवाली, भोगोंमें लगाकर पापपरायण बनानेवाली सम्पत्ति विपत्ति है, सुख दुःख है, सौभाग्य दुर्भाग्य है, बुद्धि कुबुद्धि है, कर्म कुकर्म है, आत्मीय शत्रु है और पदार्थ अपदार्थ हैं। भगवान्‌में लगानेवाले प्राणी-पदार्थ ही सर्वथा और सर्वदा हमारे हितैषी हैं। उन सारे हितैषियोंका संग्रह करो, उन्हें अपनाओ, उनका समादर करो—चाहे उनके नाम विपत्ति, दुर्भाग्य, दुःख आदि ही क्यों न हों।

विचार और आचरण

याद रक्खो—मनुष्य-जीवनके वास्तविक स्वरूपका पता उसके बाहरी वेश-भूषासे नहीं लगता, उसके विचार तथा आचरणसे ही लगता है। जिसके जैसे विचार और आचरण हैं, वैसा ही उसका स्वरूप है। अतएव तुम निरन्तर अपने विचार तथा आचरणको सँभालते रहो।

याद रक्खो—जबतक तुम्हारा विवेक जाग्रत् है, तभीतक तुम्हें अपने अच्छे-बुरे विचार और आचरणका पता लगेगा। मनुष्यका विवेक जब लुप्त हो जाता है, तब उसकी अच्छा-बुरा देखने-परखनेकी दृष्टि नष्ट हो जाती है और बुरे वातावरण तथा चिन्तनसे यदि बुराईमें अच्छाई दीखने लगती है, तब तो उसका अनायास ही पतन हो जाता है; क्योंकि तब उसकी धारणामें पाप करनेपर 'मैं पुण्य करता हूँ' ऐसी मिथ्या अनुभूति होती है और वह पापमें सफलता प्राप्त करनेपर अपनेको गौरवशाली तथा सफल-जीवन मानता है। इसलिये जहाँतक बने, विशुद्ध सत्संग तथा शुद्ध स्वाध्यायसे विवेकको जाग्रत् रक्खो।

याद रक्खो—पतन जितना सहज और शीघ्र होता है, उतना सहज शीघ्र उत्थान नहीं होता। फिसलाहटसे भरा है जगत्। सावधान रहो, सदा गिरनेसे बचो और निरन्तर ऊपर उठने अथवा सन्मार्गपर आगे बढ़नेका प्रयास उत्साहपूर्वक करते रहो।

याद रक्खो—विवेक नष्ट होकर मनुष्यका जो पतन होता है, उसमें सबसे प्रधान कारण है कुसंग। कुसंग केवल किसी पतित मनुष्यके संगको ही नहीं कहते। प्रत्येक इन्द्रियका प्रत्येक विषय ही कुसंग बन सकता है। जिस प्राणी-पदार्थके देखने, सुनने, सूँघने, चखने और स्पर्श करनेसे पापमें पुण्यकी तथा बुराई

भलाईकी धारणा होती हो, भोगोंके लिये अनुचित लालसा जगती हो, वह सभी कुसंग है। साहित्य, दृश्य, मनुष्य, भोजन-पान, वस्त्राभूषण, स्थान, वार्तालाप—सभी कुसंग बन सकते हैं। अतएव कुसंगसे सदा बचते रहो। सत्संगका सदा सेवन करो।

याद रक्खो—सत्संग किसी प्राणी, स्थान या वस्तुका नाम नहीं है। सत् हैं भगवान्, सत् है सदाचार, सत् है सद्विचार—जिस संगसे श्रीभगवान्में प्रीति बढ़ती हो, सदाचार और सद्विचारोंका उदय और संवर्धन सहज ही होता हो, वही सत्संग है। सत्संगको अमूल्य धन समझो, सत्संगके साथ किसी भी धन, सौभाग्य या पुण्यकी तुलना नहीं हो सकती। सत्संग मनुष्यको समस्त पाप-तापसे सर्वथा छुड़ाकर दिव्य पुण्यमय तथा सुखमय बना देता है। सत्संग अतुलनीय धन है।

याद रक्खो—विषयी जगत्का संग एक बार सुहावना लगता है और वह लगता है इन्द्रियोंके बहिर्मुखी—भोगमुखी स्वभावके कारण ही। पर विषयी जगत्का संग वस्तुतः मीठे विषके समान है। उसका तत्त्व-रहस्य न जाननेके कारण ही उसमें सुख तथा प्रिय बुद्धि हुआ करती है। जिनकी विवेककी आँखें खुली होती हैं, वे प्रत्यक्ष देख पाते हैं उसके भीतरी असली भयानक रूपको और उसके द्वारा होनेवाले घोर विनाशमय परिणामको। इसलिये जहाँतक बने, प्रयत्नपूर्वक मन तथा इन्द्रियोंको अन्तर्मुखी करो, उन्हें सत्में लगाये रक्खो, भगवान्के साथ नित्य निरन्तर जोड़े रखनेका प्रयत्न करो। तभी मानव-जीवन सफल होगा और जीव-जीवनका दुःखमय प्रवाह सूखेगा।

वह अपना गौरव मानने लगता है—अतः उसका जीवन पाप-जीवन बन जाता है और फलतः वह अनन्त पाप-राशिको लेकर मरता है। यों उसका मानव-जीवन केवल व्यर्थ ही नहीं होता, वह मानव-जीवनके परम तथा चरम लक्ष्य भगवत्प्राप्तिसे ही वञ्चित नहीं रहता, वह पापके परिणामस्वरूप जन्म-जन्ममें कूकर-शूकरादि, पिशाच-राक्षसादि तथा कृमि-कीटादि आसुरी योनियोंमें जाने तथा भीषण नरक-यन्त्रणाएँ भोगनेको बाध्य होता है। अतः उसका मानव-जीवन केवल व्यर्थ ही नहीं जाता, घोर अनर्थ उत्पन्न करनेवाला होता है। इसलिये भोगमें सदा ही संतोष रक्खो—जो कुछ भी प्राप्त हो जाय, उसीमें संतुष्ट रहो; किंतु भजनमें—परमार्थ-साधनमें कभी संतोष मत करो। उसको सदा बढ़ाते ही जाओ।

याद रक्खो—भगवद्भजन ही असली धन है, वही परम सम्पत्ति है। भजन न होना ही घोर दारिद्र्य तथा महान् विपत्ति है। भजनमें ही परम बुद्धिमत्ता एवं सौभाग्य है, भजन न होना ही महान् मूढ़ता एवं दारुण दुर्भाग्य है। भजन ही पुण्य है तथा भजन न होना ही भयंकर पाप है। अतएव दिन-रात भजन करो। मनसे भगवान्‌का चिन्तन, वाणीसे भगवान्‌के नाम-गुणका गान तथा शरीरसे होनेवाले प्रत्येक कल्याणमय कार्यके द्वारा भगवान्‌का सेवन-पूजन करो। यों दिन-रात भगवद्भजनमें लगे रहकर जीवनको भजनमय बना दो। तभी मानव-जीवन मानव-जीवन है और तभी उसकी सार्थकता है।

मनुष्य कर्मयोनि

याद रक्खो—मनुष्य कर्मयोनि है। कर्म करना उसका स्वभाव है। अतः वह विना कर्म किये रह ही नहीं सकता। सुव्यवस्थित शुभ कर्म नहीं करेगा तो अव्यवस्थित अशुभ कर्म करेगा, आलस्य तथा प्रमादयुक्त निकम्मे कर्म करेगा। जिनका परिणाम उसके लिये अत्यन्त हानिप्रद एवं दुःखजनक होगा। इसलिये उसे सदा-सर्वदा शुभकर्ममें लगे रहना चाहिये।

याद रक्खो—जिम्मेवारीके कर्मका भार न रहनेसे ही मनुष्य प्रमाद करता है। इसलिये तुम अपनेको जिम्मेवारीके साथ कर्ममें

लगाये रक्खो, जिससे प्रमादकी बात सोचने-करनेके लिये अवकाश ही न मिले। 'करने योग्य' कर्मका न करना और 'न करने योग्य' कर्म करना—यही प्रमाद है। मनुष्य जब प्रमादमें फँस जाता है, तब उसका सर्वथा पतन होते देर नहीं लगती। प्रमाद मृत्युसे भी बढ़कर है, अतएव प्रमादसे सदा बचो।

याद रक्खो—जबतक तुम जिम्मेवारीके साथ अपना सारा समय कर्तव्य (करनेयोग्य) शुभकर्ममें नहीं लगाये रक्खोगे—तब-तक प्रमाद होनेकी सम्भावना रहेगी ही। शुभकर्म वही है, जिससे तुम्हारा अन्तःकरण पवित्र हो, मनके भाव उन्नत तथा विशुद्ध हों, परिणाममें अपना तथा दूसरोंका हित होता हो, चित्तमें शान्ति तथा सुखकी वृद्धि होती हो एवं सुव्यवस्थापूर्वक सहज भावसे सत्कर्ममें उत्साहयुक्त प्रवृत्ति बनी रहे।

याद रक्खो—शुभ कर्ममें लगे रहनेका यह अर्थ नहीं है कि बाहरी कर्मोंमें इतना अधिक फँसा रहना पड़े, जिससे विचार करने, कर्तव्याकर्तव्य सोचने, शास्त्र तथा सत्पुरुषोंसे कर्मके लिये परामर्श करने, सदाचारकी रक्षा एवं उन्नति करने, भगवत्स्मरण तथा नियमित उपासना-आराधना करने और घरके लोगोंके साथ यथोचित व्यवहार-बर्ताव तथा उनके प्रति कर्तव्यपालन करनेके लिये ही अवकाश न मिले। ऐसा कर्मबहुल जीवन मशीनकी तरह जड़वत् बन जाता है और आखिर उसे प्रमादग्रस्त होकर पतित होना पड़ता है।

भगवान्के स्वरूपभूत गुण

याद रक्खो—भगवान् नित्य, सत्य हैं, आनन्दमय हैं, सर्वशक्तिमान् हैं, सर्वज्ञ हैं, सर्वेश्वर हैं और सुहृद् हैं। ये सब चीजें उनमें गुणरूपसे पृथक् नहीं हैं, स्वरूपभूत हैं, स्वभावरूप हैं। अतएव इन सब स्वरूपभूत गुणोंको धारण किये ही भगवान् जीवमात्रके प्रति अहैतुक सौहार्द रखते हैं; क्योंकि सुहृद् रहना उनका स्वभाव है। अतएव उनकी अहैतुकी कृपा नित्य-निरन्तर अनन्तरूपसे तुमपर बरस रही है।

याद रक्खो—उन सर्वेश्वरके नियन्त्रणमें ही उन्हींकी शक्तिसे जीवमात्रके लिये विधानकी रचना होती है। उन सुहृद्का कोई भी विधान ऐसा नहीं हो सकता, जिससे परिणाममें हमारा तनिक-सा भी अहित—अमङ्गल होनेकी सम्भावना हो। न उनसे कर्भ भ्रम-प्रमाद होता है, न उनकी शक्तिमें ही कभी कोई कमी आती है, जिसके कारण विधानके निर्णयमें या उसके द्वारा मङ्गलर्क सिद्धिमें कोई भ्रान्ति या त्रुटि आ सकती हो।

याद रक्खो—परम सुहृद्, अहैतुक कृपा-स्वभाव भगवान्के मङ्गल-विधानमें तुम्हें कहीं कभी जो प्रतिकूलताकी प्रतीति होती है और तुम दुखी हो जाते हो, इसमें तुम्हारा अज्ञान, तुम्हारी भ्रान्त धारणा और तुम्हारी अपना मङ्गल-हित सोचनेवाली बुद्धिकी विपरीतता ही प्रधान कारण है। उनकी विधान-रचना एवं उसके अनुसार उसका प्रत्येक फल वस्तुतः तुम्हारे परम हितके लिये ही है; क्योंकि वह उन्हींके द्वारा तुम्हें प्राप्त हो रहा है, जो नित्य सत्य आनन्दमय सर्वशक्तिमान् सर्वज्ञ होनेके साथ ही तुम्हारे स्वभाव-सुहृद् हैं।

याद रक्खो—तुम्हारे विश्वासकी कमीसे ही तुम उन

मङ्गल-विधानपर संदेह करके सदा दुखी रहते हो और उसके विरुद्ध अपने मनका विधान बनानेके लिये चिन्ता, संकल्प और प्रयत्न करते हो, जिससे परिणाममें तुम्हें उलटे निराशा, अशान्ति तथा दुःख ही मिलते हैं, शान्ति-सुख तो कभी दिखायी ही नहीं देते।

याद रक्खो—तुम यदि सर्वशक्तिमान् भगवान्‌के इस स्वभाव-सुलभ सौहार्दपर विश्वास कर लो तो तुरंत तुम्हारे मनको आश्वासन तथा शान्ति मिल जायगी, जो सारे दुःखोंका सदाके लिये नाश करके तुम्हें सहज सुखी बना देगी। फिर, तुम्हें उन प्रियतम प्रभुके द्वारा रचित प्रत्येक विधानमें, उनके द्वारा प्रेषित प्रत्येक परिस्थितिमें उनका परम मङ्गलमय मधुर मनोहर स्पर्श प्राप्त होता रहेगा। प्रत्येक परिस्थितिमें तुम विक्षोभरहित आनन्दपूर्ण नेत्रोंसे उनकी परम मङ्गलमय मधुर मनोहर मुसकानका साक्षात्कार करोगे। प्रत्येक परिस्थितिमें सहज ही तुम्हारा परम कल्याण चाहनेवाले उनके परम मङ्गलमय मधुर मनोहर सच्चिदानन्दमय मनके दर्शन होंगे और तुम दिव्य आनन्दसागरमें सदाके लिये निमग्न हो जाओगे।

याद रक्खो—विश्वास होते ही यह सब होने लगेगा। अशान्ति, दुःखका सारा अन्धकार उसी प्रकार भागने लगेगा, जिस प्रकार सूर्योदयसे पूर्व ही समस्त अन्धकार मरनेकी तैयारी करने लगता है। अतः तुम तो बस, नित्य-निरन्तर उनके मधुर मनोहर सुहृद्-स्वभावकी ओर देखते रहो, उसीका चिन्तन-मनन करते रहो तथा मनमें बराबर यही निश्चय करते रहो कि वे मङ्गलमय सर्वशक्तिमान् सर्वज्ञ प्रभु मेरे अकारण सुहृद् हैं। अतएव कोई भी पाप-ताप, भ्रान्ति-भय, अशान्ति-दुःख मेरे पास कभी आ ही नहीं सकते। आ ही नहीं सकते।

प्रेम त्यागमूलक है

याद रक्खो—बन्धन करनेवाली है ममता, प्रेम नहीं। बन्धन करनेवाला है भोग, त्याग नहीं। अतः ममता कहीं मत करो, किसी भी प्राणी-पदार्थ-परिस्थितिमें 'मेरा'पन मत रक्खो। भोगवासनाको लेकर किसी भी प्राणी-पदार्थ-परिस्थितिसे सम्पर्क मत रक्खो, सम्बन्ध मत जोड़ो। परंतु प्रेम करो सबके साथ, त्याग करो सबके लिये उनके सुखार्थ, उनके हितार्थ और उनके अधिकार-रक्षणार्थ। वस्तुतः प्रेम है ही त्यागमूलक, भोगमूलक कदापि नहीं।

याद रक्खो—तुम कहते हो—'अमुक मुझसे प्रेम नहीं करता—अर्थात् मेरे हित-सुखके लिये वह त्याग नहीं करता' पर तुम अपनी ओर देखो—तुम सचमुच उससे प्रेम करते हो क्या?

तुम सचमुच उसके सुख-हितके लिये त्याग करते हो क्या ? यदि नहीं करते तो उससे कैसे चाहते हो और क्यों उसपर दोषारोपण करते हो ? तुम प्रेम करो, अपनी ओरसे उसके हित-सुखके लिये त्याग करो। फिर देखोगे, वह तुमसे कितना प्रेम करता है।

याद रक्खो—सर्वत्र भगवान् भरे हैं—सब कुछ भगवान्‌से परिपूर्ण है। अतः सभी तुम्हारे पूज्य हैं, सभी आदरणीय हैं, सभी सेव्य हैं और सभी अपने हैं। तुम यदि सदा 'सबके रूपमें भगवान् हैं,' यह विश्वास करोगे और यदि तुम्हारा विश्वास और दृढ़ हो जायगा तो तुम्हें सबमें निश्चय ही भगवान् दीखने लगेंगे। तुम ऐसा करके देखो। परंतु जबतक ऐसा न हो, तबतक आप्तवाक्योंपर विश्वास करके सबमें भगवान्‌की भावना करो और सबके साथ नम्रता, विनय तथा सम्मानयुक्त व्यवहार करो; सबको सुख पहुँचानेका मनोरथ और प्रयास करो। बड़ी सावधानीसे यह ध्यान रक्खो—तुम्हारे द्वारा जान-बूझकर किसीका भी जरा-सा भी अहित न हो जाय, किसीके भी हित और न्याय्य अधिकारपर तुम्हारे द्वारा जरा-सा भी आघात न पहुँच जाय।

याद रक्खो—भगवान् तो सभीमें हैं, सर्वदा हैं और सर्वत्र हैं। परंतु जहाँ-जहाँ दैन्य, दुःख, अभाव, पीड़ा, व्याधि, मार्गच्युति, भय, विषाद और असहायावस्था है, वहाँ-वहाँ मानो भगवान् उस-उस रूपमें तथा उस-उस परिस्थितिमें तुम्हें दी हुई अपनी ही वस्तुओंके द्वारा तुमसे यथायोग्य अपनी सेवा चाह रहे हैं। तुमसे अपनी ही वह वस्तु अपने ही लिये—तुम्हें दाता एवं दयालुपनका गौरवदान

देते हुए, माँग रहे हैं। अतएव इस अवस्थामें मुक्तहस्त होकर उनकी यथायोग्य सेवा करो और भगवान्‌का स्नेहपूर्ण आशीर्वाद प्राप्त करो।

याद रक्खो—तुम्हारे पास जो कुछ है, सब भगवान्‌का है और वह भी है भगवान्‌की सेवा-पूजाके लिये ही! तुम्हारा अधिकार तो केवल भगवान्‌के भोग लगानेके बाद बचा हुआ प्रसाद पानेका ही है और वास्तवमें यही परम सौभाग्य है। उनकी वस्तुको सदा उन्हींकी मानते हुए, उसके द्वारा उनकी सेवा करो और बचा हुआ पुण्यमय, अमृतमय प्रसाद पाकर कृतार्थ होते रहो। उस वस्तुके सम्बन्धमें तो तुम्हारे दो ही कर्तव्य हैं—[illegible] संरक्षण-संवर्धन करो और सदा-सर्वदा प्रसन्न-हृदयसे उसे उनकी सेवामें लगा-लगाकर परमानन्द लाभ करते रहो।

याद रक्खो—यह आवश्यक नहीं है कि उनकी सेवा अमुक वस्तुसे ही हो सकती है। तुम्हारे पास जो कुछ भी मन, तन, बुद्धि, धन, विद्या, शक्ति आदि है उसीके द्वारा उनकी सेवा करो। वे जिस-जिस रूपमें जो-जो चाहते हैं, उस-उस चाहके अनुरूप तुम्हारे पास जो-जो वस्तुएँ हैं, केवल उन्हींके द्वारा उनकी सेवा करो। पर असल बात तो यह है कि उन वस्तुओंको मानो उन्हींकी और उनका सदुपयोग करो उनकी सेवामें ही। यही तुम्हारे सारे बन्धनोंको तुरंत काटनेवाला और भगवान्‌को तुम्हारे साथ नित्य बँधे रहनेके लिये बाध्य [illegible] है।

जीवन भगवान्की क्रीड़ा

याद रक्खो—तुम्हारा सारा जीवन भगवान्की क्रीड़ा है और तुम्हारा अहंकार तथा तुम भगवान्की क्रीड़ास्थली हो। तुम्हारे सुख-दुःख, लाभ-हानि, उत्सव-अवसाद, स्वस्थता-रुग्णता, मान-अपमान, स्तुति-निन्दा, निज-पर, प्रिय-अप्रिय, शुभ-अशुभ, जीवन-मरण—सभी भगवान्की क्रीड़ा हैं, उनकी लीला हैं। तुम जो क्रीड़ाक्षेत्र हो—अपनेको कर्ता-भोक्ता मानकर, व्यर्थ ही भगवान्की लीला तथा भगवान्के प्राणी-पदार्थोंमें अहंता-ममता, कामना-आसक्ति

करके अपने-आप ही अशान्ति, क्षोभ, दुःख, पाप आदिको बुलाकर उनके अधीन हो जाते हो, इस मोहको—प्रमादको छोड़कर अपनी यथार्थ स्वरूपस्थितिको पहचानो और इन सारे अज्ञानजनित स्व-रचित मिथ्या बन्धनोंको तोड़कर भगवान्‌को स्वतन्त्ररूपसे निर्बाध उनकी मनमानी लीला करने दो—खेल खेलने दो ।

याद रक्खो—तुम उनके लीलाक्षेत्र ही हो, पर यदि सर्वथा अपनेको उनकी लीलाका क्षेत्र न देख सको तो कम-से-कम यही करो कि तुम्हारे जिम्मेका जो खेल है, उसे उन एकमात्र स्वामी भगवान्‌की प्रीतिके लिये उनके लीला-विधानके अनुसार खेलते रहो और उनकी शेष सारी लीलाओंको—सब खेलोंको चाहे वे शृंगार-रसके हों या भयानक-रसके, करुण-रसके हों या रौद्र-रसके, हास्य-रसके हों या वीभत्स-रसके—किसी भी रसके कैसे भी हों, देखते रहो और उन अजब खिलाड़ी लीलामय भगवान्‌की लीला-चातुरीपर नित्य मुग्ध होते रहो ।

याद रक्खो—वस्तुतः इस समस्त अनन्त विश्व-ब्रह्माण्डमें दो ही चीजें हैं—जो है वह 'भगवान्' है और जो हो रहा है—वह 'भगवान्‌की लीला' है । लीलामय भगवान् और भगवान्‌की लीलामें स्वरूपतः कोई भेद नहीं है । वस्तुतः लीला, लीला करनेवाले भगवान् और लीलाके साथी-संगी तथा उपकरणादि सब भगवान् ही हैं । भगवान् सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र सर्वलोक-महेश्वर हैं और वे नित्य नयी लीला करते हैं तथापि उन सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान्‌की

सारी लीलाएँ पूर्वज्ञात, पूर्वरचित, सुव्यवस्थित, निर्भ्रान्त एवं परमानन्दमयी हैं। भगवान्की इस लीलामें नित्य निरन्तर केवल सीमारहित आनन्द ही आनन्द है; क्योंकि यह लीला उन अनन्त परमानन्दस्वरूप भगवान्की ही अभिव्यक्ति है। वे लीलामय ही लीलाके रूपमें प्रकट हैं।

याद रक्खो—भगवान्की इस लीलामें तुम्हें यदि कहीं दुःख, पीड़ा, निराशा, विषाद, भय, शोक आदि काली-कराली छायामूर्तियाँ दीखती हैं या उनकी कल्पना होती है तो इसका अभिप्राय यही है कि तुमने अभीतक इस बातको ठीक-ठीक समझा-देखा नहीं है कि इस अनन्त विश्वमें केवल परमानन्दमय भगवान् हैं तथा उनकी आनन्दमयी लीला ही अनवरत चल रही है। सृजन और संहार दोनों उस लीलाकी ही दो दिशाएँ हैं। इस रहस्यको समझ-देख लेनेपर तो सदा सर्वथा सर्वत्र आनन्द ही आनन्दका अनुभव होता है।

विवेकका सदुपयोग

याद रक्खो—तुम मनुष्य हो, भगवान्‌ने तुमको भविष्यके अच्छे-बुरे सोचनेकी बुद्धि दी है, विवेक दिया है। भगवान्‌के दिये हुए उस विवेकके द्वारा अच्छे-बुरेका यथार्थ निर्णय करके अच्छेका ग्रहण और बुरेका त्याग करो। तभी तुम्हारे विवेकका सदुपयोग तथा संरक्षण होगा और विवेकके सदुपयोग तथा संरक्षणसे ही तुम्हारी मानवता सिद्ध होगी।

याद रक्खो—विवेकसे रहित मनुष्य काम-क्रोध-लोभके वेगसे ग्रस्त होकर पशु या पिशाच बन जाता है। कहीं-कहीं तो वह पशु तथा पिशाचके स्तरसे भी आगे बढ़कर इतना मूढ़ और इतना भयंकर बन जाता है कि महान् राक्षस भी उसकी समता नहीं कर पाता, वह अपने तथा जगत्‌के अमङ्गलमें कारण घोर पापका समुद्र बन जाता है।

याद रक्खो—मनुष्यके पास जो बुद्धि है, वह जब विपरीत निर्णय देनेवाली तथा विपरीत मार्गपर चलानेवाली बन जाती है, तो फिर उस मनुष्यके समस्त साधन उसके लिये भयानक पापके साधन बन जाते हैं। जिन ज्ञान-विज्ञानके आविष्कारोंसे, जिन भौतिक तथा दैविक सामग्रियोंसे वह समस्त जगत्‌की सेवा करके सबको सुख पहुँचाकर परिणाममें अपना परम कल्याण कर सकता है, अविवेकके कारण काम-क्रोध-लोभपरायण मनुष्य उन्हीं ज्ञान-विज्ञानके साधनोंसे, उन्हीं भौतिक तथा दैविक सामग्रियोंसे अपने मिथ्या लाभकी कल्पनासे अहंकारमें भरकर समस्त जगत्‌के विनाशकी बात सोचता है और फलतः स्वयं जीवनभर अशान्ति तथा चिन्ताकी आगमें जलता हुआ बुरी तरह मरता है और

मरणोत्तर भीषण नरक-यन्त्रणा भोगने एवं बार-बार आसुरी योनियोंमें जन्म लेनेको बाध्य होता है। यह सब विवेक नष्ट होनेका ही कुपरिणाम है।

याद रक्खो—काम, क्रोध और लोभ—ये तीन नरकके दरवाजे हैं और आत्माका पतन करनेवाले हैं। विवेकमें शिथिलता आते ही इनकी प्रबलता बढ़ जाती है। फिर ये रहे-सहे विवेकको भी नष्ट कर देते हैं। तब मनुष्य बुद्धिका दुरुपयोग करके अपने सहज प्राप्त साधनोंके द्वारा अन्य सबके विनाशकी बात सोचता है और योजना बनाता है। हिंसावृत्तिवाले हिंसक पशु सिंह, बाघ, साँप आदि तो सामने आये हुए जीवकी ही हिंसा करते हैं, वे योजनापूर्वक हिंसा नहीं करते, वे योजनापूर्वक विषय-संग्रहका प्रयास नहीं करते। पर मनुष्य योजना बनाना जानता है और उसके पास योजनाके अनुसार कार्य करनेके साधन भी हैं; ऐसा शक्तिमान् मनुष्य जब अपनी बुद्धि तथा प्राप्त साधनोंको अमङ्गलमें मङ्गल मानकर अमङ्गल-साधनमें ही लगा देता है, तब वह पशु तथा पिशाचसे भी कितना अधिक आगे बढ़ जाता है, अपने तथा जगत्के लिये कितना अहितकर—कितना शत्रु होता है। इसपर गहराईसे विचार करो।

याद रक्खो—मानव-जीवन प्रभुकी प्राप्तिके लिये है, भोगोंके लिये नहीं। पाप-साधन करके अपना अमङ्गल करनेके लिये तो कदापि नहीं। इस बातको सोच-समझकर विवेकका संरक्षण और सदुपयोग करो तथा मानव-जन्मके असली लाभ परमात्मा या भगवत्प्रेमको प्राप्त करके जीवनको सफल बना लो।

तथा शरीरके द्वारा शुभ क्रियाएँ होंगी। तब व्यक्ति अपने-आप ही ठीक हो जायगा। व्यक्तिका सुधार ही विश्वका सुधार है।

याद रक्खो—आज जो दुनियामें कलहकी आग धधक रही है, छोटी-सी झोंपड़ीसे लेकर बड़े-बड़े राष्ट्रोंमें विभिन्न निमित्तोंसे जो अवाञ्छनीय घटनाएँ घट रही हैं तथा स्थान-स्थानसे पद-पदपर त्याग, प्रेम, संयम एवं सद्भावके अभावसे जो बुराइयाँ पैदा हो रही हैं, उनमें व्यक्तिका बुद्धिनाश ही प्रधान कारण है। व्यक्तिका अधर्म-विचार तथा अधर्माचरण ही प्रधान कारण है। यह किसी भी कानूनसे नहीं दूर हो सकता। इसके लिये व्यक्तिकी बुद्धि शुद्ध होनी चाहिये और प्रत्येक व्यक्तिको अपने सुधारमें लगना चाहिये।

याद रक्खो—तुम्हारा सुधार तुम्हारे अपने चाहने तथा करनेसे ही होगा। इसलिये अपना सुधार चाहो, अपने दोषोंको निर्मूल करनेका प्रयत्न करो, अपनेको संस्कृत करो, अपनेको शुभ-चरित्र, सच्चरित्र, सात्त्विक-चरित्र, उच्च-चरित्रवाला सुसंस्कृत पुरुष बनाओ और अपना शुभ निर्माण करो—इसके लिये लग जाओ श्रद्धा-विश्वासपूर्वक पूरे मनसे, पूरी शक्ति लगाकर। दूसरेकी ओर न देखो। भगवान् तुम्हारे सहायक होंगे। उनका बल तुम्हारे साथ होगा। उनसे प्रार्थना करो—उनकी कृपाशक्तिपर विश्वास करो। सारे विघ्नोंका विनाश करके तुम्हें आगे बढ़ाकर ले जायगी शीघ्र ही—उनकी कृपा। फिर समाजका, राष्ट्रका, विश्वका सुधार स्वयमेव ही हो जायगा।

हैं, वे प्रणवरूप हैं । 'प्रणव' उनका वाच्य है, वे वाचक हैं । उन पञ्चानन प्रभुके उत्तरकी ओरके मुखसे अकार, पश्चिमके मुखसे उकार, दक्षिणके मुखसे मकार, पूर्वके मुखसे बिन्दु और मध्यके मुखसे नाद उत्पन्न हुआ है । इस प्रकार पाँचों मुखोंसे निर्गत इन्हीं सबके समग्ररूपमें 'ॐ' एकाक्षर बना है । समस्त नामरूपात्मक जगत्, स्त्री-पुरुषादि समस्त प्राणिसमुदाय तथा चारों वेद—सभी इस 'प्रणव' (ॐ) से ही व्याप्त है । यह ॐ शिव-शक्तिका बोधक है ।

याद रक्खो—सृष्टि, स्थिति, संहार, लय और अनुग्रह—इन पाँच प्रकारकी क्रियाओंके रूपमें भगवान् शिवकी लीला निरन्तर होती रहती है । इनमें चिद्रूपका सम्बन्ध 'अनुग्रह'से, आनन्द-रूपका 'लय'से और इच्छा-रूप, ज्ञानरूप तथा क्रियारूपका सम्बन्ध 'सृष्टि' 'स्थिति' और 'संहार'से है । इन्हीं पाँच रूपोंके प्रकाशक

भगवान् शिवके—ईशान, तत्पुरुष, अघोर, वामदेव और सद्योजात नामक पाँच मुख हैं। इनमें ईशान तथा तत्पुरुषसे तुर्यातीत तथा तुर्यदशाकी एवं सद्योजात, वामदेव तथा अघोरसे जाग्रत्, स्वप्न और सुषुप्तिकी व्याप्ति है। इसी क्रमसे पञ्चमहाभूतोंकी व्याप्ति इनसे मानी जाती है।

याद रक्खो—भगवान् शिवकी पञ्च मूर्तियोंमें प्रथम मूर्ति क्रीड़ा करती है, दूसरी तपस्या करती है, तीसरी लोकसंहार करती है, चौथी प्रजासृष्टि करती है और पाँचवीं सद्वस्तुयुक्त समस्त संसारको आच्छन्न करके रखती है। ईशानमूर्ति सबकी प्रभु, सबमें वर्तमान, सृष्टि-प्रलय-रक्षा करनेवाली है।

याद रक्खो—भगवान् शिवकी ईशान नामक प्रथम मूर्ति साक्षात् प्रकृति-भोक्ता क्षेत्रज्ञ पुरुषमें अधिष्ठित है, तत्पुरुष नामक द्वितीय मूर्ति सत्त्वादि गुणोंके आश्रय भोग्य प्रकृतिमें अधिष्ठित है, तृतीय अघोर नामकी मूर्ति धर्म आदि अष्टाङ्ग-युक्त बुद्धिमें अधिष्ठित है, चतुर्थ वामदेव मूर्ति अहंकारमें अधिष्ठित है और पञ्चम सद्योजात मूर्ति मनमें अधिष्ठित है।

याद रक्खो—भगवान् शिवकी शर्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, ईशान, महादेव तथा पशुपति नामकी अष्टमूर्तियाँ क्रमशः पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्र और क्षेत्रज्ञ (यजमान) में अधिष्ठित हैं। इन्हीं आठोंके रूपमें उनकी पूजा करनी चाहिये।

याद रक्खो—भगवान् परम शिवके तीन व्यूह हैं—और इकतीस प्रकार हैं—तीन व्यूहोंके नाम शिव, सदाशिव और

महेश्वर हैं। शिव एक रूप है, सदाशिव पञ्च रूप और महेश्वर पञ्चविंशति रूप।

याद रक्खो—भगवान् शिवके दूसरे प्रकारसे चार व्यूह हैं—ब्रह्मा, काल, रुद्र और विष्णु। भगवान् शिव इन सबके आधार एवं शक्तिके भी आधार तथा प्रभव-स्थान हैं।

याद रक्खो—परात्पर परतम भगवान् शिव त्रिदेवगत रुद्र नहीं हैं। भगवान् शिवकी इच्छासे प्रकट रजोगुणरूप धारण करनेवाले ब्रह्मा, सत्त्वगुणरूप विष्णु एवं तमोगुणरूपरुद्र हैं, जो सृजन, रक्षण तथा संहारका कार्य करते हैं। ये तीनों वस्तुतः शिवकी ही अभिव्यक्ति हैं, इसलिये शिवसे पृथक् भी नहीं हैं। परात्पर परतम सदाशिव, महाविष्णु आदि स्वरूपतः ही एक तत्त्व हैं। इनमें भेद-बुद्धि या ऊँच-नीचकी भावना करके राग-द्वेष-युक्त स्तुति-निन्दा करना पाप है तथा पतनका प्रत्यक्ष कारण है।

याद रक्खो—भगवान् शिव या रुद्र अनादिकालीन वैदिक देवता हैं; और इनकी लिङ्ग-पूजा भी सनातन है। न तो ये आधुनिक देव हैं, न लिङ्ग-पूजा ही आधुनिक या अनार्य-पूजा है। शिवलिङ्ग चिन्मय है, स्थूल अङ्गविशेष नहीं। चिन्मय आदिपुरुषका स्वरूप ही लिङ्ग है। जिनसे चराचर विश्वकी उत्पत्ति हुई है, वे ही सबके लिङ्ग या कारणस्वरूप हैं। लिङ्गपीठ अर्थात् प्रकृति पार्वती हैं और लिङ्ग चिन्मय परब्रह्म पुरुष हैं। पीठ अम्बामय तथा शिवलिङ्ग चिन्मय पुरुषमय है।

याद रक्खो—लिङ्गका अर्थ है चिह्न । जैसे सींग, थूहा, पूँछ, गलकम्बल—यों गौ-जातिके लिङ्ग हैं—

'विषणी ककुद्मान् प्रान्ते वालधिः सास्नावानिति गोत्वे दृष्टं लिङ्गम् ।'

लिङ्ग कहते हैं—पहचान करनेवाले चिह्नको—**'आकृतिर्जातिलिङ्गाख्या ।'** मूँछ पुरुषका लिङ्ग है—मूँछवाला पुरुष होता है, नारी नहीं; इसी प्रकार भगवान् शिवका परिचायक चिह्न है लिङ्ग। शिवपुराणमें शिवलिङ्गोंके जो रूप बताये हैं, उन्हें जानकर कोई यह नहीं कह सकता—यह मनुष्यका शिश्न है। वहाँ बताया है सबसे पहला लिङ्ग ज्योतिस्तम्भरूप है; जो प्रणव (ॐ) है। यह सूक्ष्म लिङ्ग प्रणवरूप तथा निष्कल है। स्थूल लिङ्ग सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड है।

याद रक्खो—शिवलिङ्गकी आकृति ब्रह्माण्डकी ही आकृति है, यह मानो ब्रह्माण्डका एक मानचित्र है। चराचरात्मक सम्पूर्ण जगत् इस ब्रह्माण्डरूप शिवलिङ्गमें है। एक शिवलिङ्गके पूजनसे ही सूर्य, चन्द्र, नारायण, लक्ष्मी सबकी पूजा सम्पन्न हो जाती है।

जैसे भगवान् विष्णुके अव्यक्त ईश्वररूपकी प्रतीक शालग्रामरूप पिण्डी है, वैसे ही भगवान् शिवके अव्यक्त ईश्वररूपकी प्रतिमा लिङ्गरूप पिण्डी है।

याद रक्खो—भगवान् शिव ही समस्त विद्याओंके—योग, ज्ञान, भक्ति, कर्म आदि परम कल्याणकारिणी विद्याओंके भण्डार जगद्गुरु हैं। वे केवल शिक्षा देनेवाले ही गुरु नहीं हैं, सभी विषयोंमें स्वयं आदर्शरूप हैं। वे परम योगाचार्य—योगेश्वर हैं।

उन्हींके शिष्य-प्रशिष्योंके द्वारा योगका प्रसार-प्रचार तथा संरक्षण हुआ तथा होता है ।

याद रक्खो—भगवान् शिव पूर्णतम योगेश्वर, महान् गम्भीर ज्ञानस्वरूप होनेपर भी अपनी साधुताका परिचय करानेवाले महान् सरलहृदय हैं । वे बहुत लम्बी-चौड़ी पूजा-उपासनाकी प्रतीक्षा न करके बहुत शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं, इसीसे उनका 'आशुतोष' नाम प्रसिद्ध है और प्रसन्न होकर वे परम अलभ्य वस्तु भी सहज ही दे डालते हैं—इसीसे वे 'औढरदानी' कहलाते हैं । वे सहज कल्पतरु हैं; उनसे जो मनुष्य, जो कुछ भी चाहता है, भगवान् शिव उसे वही दे देते हैं । उनके औढरदानी या आशुतोष होनेका यह अभिप्राय नहीं है कि उनमें बुद्धि और विवेककी कमी है । वस्तुतः समस्त विवेक, ज्ञान एवं बुद्धिके आधार ही भगवान् शिव हैं । वे ही जगद्गुरु-रूपमें समस्त ब्रह्माण्डके सम्पूर्ण देवर्षि-मुनि-मानवों-को ज्ञान दान देते हैं । यह तो भगवान् शंकरकी एक विशेष दयालुता है कि वे सबके मनोरथ पूर्ण करनेमें सदा तत्पर रहते हैं ।

याद रक्खो—भगवान् शिव सदा ही मङ्गलमूर्ति हैं, कल्याण-मय हैं । उनका अशिव वेष विषय-वैराग्यका आदर्श है, न कि पागलपनका । जो लोग भगवान् शिवको नशेबाज, भँगेड़ी, गँजेड़ी, पागल या मसानमें रहनेवाले औघड़ मात्र मानते हैं, वे अपनी ही सदाचार-हीनताका शिवपर आरोप करके अपने दोषोंको ढकनेके लिये भगवान् शिवका सहारा लेकर अनर्थ करते हैं । जैसे

व्यभिचारप्रिय लोग भगवान् श्रीकृष्णके परम पवित्र रासका रहस्य न समझकर प्रकारान्तरसे अपनी व्यभिचार-वृत्तिका समर्थन करते हैं, वैसे ही शिवके आचरणोंके अनुकरणका ढोंग रचकर असदाचारी लोग ऐसा कहते हैं । सच्चे शिवभक्तके लिये सदाचारी होना परमावश्यक है । जान-बूझकर अपवित्र आचरणको जीवनमें भरे रखनेवाला कोई भी शिवभक्त नहीं हो सकता ।

याद रक्खो—त्रिगुणमय जगत् ही बन्धनरूप है, शिवके भजनसे मनुष्य गुणातीत हो जाता है—उसके तीनों गुण भस्म हो जाते हैं; इसीसे वे 'त्रिपुरारि' हैं । अभिमान-क्रोध आदि दोष ही सर्प हैं, इन सबको अपने वशमें करके भगवान् शंकरने अपना भूषण बना लिया है, इसीलिये वे 'सर्पभूषण' हैं । धर्म ही वृषभ है, वे नित्य धर्मपर आरूढ़ रहते हैं, इसीसे 'वृषभवाहन' हैं । भगवान् शिवकी विभूति ही जगत्को यथार्थ विभूति प्रदान करती है, इसीसे वे 'विभूति'को सदा सारे शरीरपर लगाये रहते हैं । सम्पूर्ण चराचर भूत उन्हींके अधीन हैं, इसीसे वे 'भूतनाथ' हैं । उनका प्रत्येक अङ्ग, आभूषण आध्यात्मिक अर्थ रखता है ।

याद रक्खो—भगवान् शिवका नाम परम मङ्गलमय, कल्याणमय, सर्वदुःखनाशक, सर्वसुखविधायक, सर्वसिद्धिदाता और भोग-मोक्ष देनेवाला है । अतएव श्रद्धापूर्वक भगवान् शिवके एक नाम या पञ्चाक्षर 'नमः शिवाय' मन्त्रका जप करो और सहज ही आशुतोष शंकरकी कृपा प्राप्त करके कृतार्थ हो जाओ ।
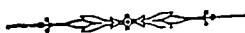
भगवान् ही एकमात्र रस है

याद रक्खो—एकमात्र भगवान् ही 'रस' है। इसी रसका जगत्‌में सर्वत्र विस्तार है, पर प्रकृतिके संयोगसे मूल तत्त्वके रूपमें नित्य एक-रस रहते हुए ही सृजन-पालन-संहार लीलाके लिये इसके नौ रस हो जाते हैं—शृङ्गार, हास्य, करुण, वीर, रौद्र, भयानक, बीभत्स, अद्भुत और शान्त।

याद रक्खो—इन्हीं नौ रसोंमें सृजन-पालन-संहारके सारे कार्य चलते रहते हैं। जो समष्टिमें है, वही व्यष्टिमें—इस दृष्टिसे प्रत्येक मानवका जीवन भी इन्हीं नौ रसोंसे ओतप्रोत है।

दि० मु० स० ७—

याद रक्खो—इस विश्वमें नित्य निरन्तर रसमय भगवान्की रसमयी लीला हो रही है। भगवान् ही नटवर नटराजके रूपमें यहाँ लीलानृत्य कर रहे हैं। इस लीलानृत्यके दो प्रधान भेद हैं—लास्य और ताण्डव। नौ रसोंमें पहले चार लास्य नृत्यके रस हैं और दूसरे चार ताण्डवके। जहाँ इन दोनों नृत्योंका समरस ग्रहण है, वहाँ शान्त-रस है। यह शान्त-रस रसमय भगवान्की ओर ले जानेवाला है।

याद रक्खो—शान्त-रसके दो भेद हैं—साधन-शान्त-रस और साध्य-शान्त-रस। इस साधन-शान्त-रससे ही भगवद्भक्तिके रसोंका—रतिका प्रारम्भ होता है। ये पाँच रस या रति हैं—शान्त, दास्य, सख्य, वात्सल्य और मधुर। दास्यसे लेकर मधुरतक चारों ही रसोंमें शान्त-रसकी भूमिका अत्यावश्यक और अनिवार्य है। शान्त-रसमें साधक इन्द्रियदमन, मनकी शान्ति, विषय-वैराग्य, स्व-सुख-वासनाजनित विषयासक्ति तथा विषयकामनासे रहित त्याग-भाव एवं भगवान्के अनुकूल सदाचार-सद्विचार-सद्भाव आदिको न्यूनाधिक रूपसे प्राप्त कर लेता है। इस साधन-शान्त-रसकी वेदान्त-साधनके साधन-चतुष्टयकी तीसरी स्थिति—षट्सम्पत्ति (शम, दम, तितिक्षा, उपरति, श्रद्धा और समाधानरूपा छः सम्पत्ति, वैराग्य तो इनके पहले ही हो जाता है) से तुलना की जा सकती है।

याद रक्खो—जबतक मनुष्य अपनी अलग किसी प्रकारके सुखकी स्थितिकी कल्पना करके उसको चाहता रहता है, तबतक

वह भगवान्के 'अनन्य दासत्व'में अपनेको नियुक्त नहीं कर सकता। भक्तराज श्रीहनुमान्जीकी भाँति अपनेको भूल जानेपर ही यथार्थ 'सेवक'-भावका प्रकाश होता है। जबतक सेवक एकमात्र अपने स्वामीके अनन्य सेवा-सुखके अतिरिक्त अन्य कहीं किसी प्राणी-पदार्थमें सुखकी कल्पना करता है, तबतक वह सच्चा सेवक—'दास्य-रति'वाला दास नहीं बन सकता।

याद रक्खो—जब दास्य-रति उत्तरोत्तर प्रगति करती हुई मधुर-रतिमें परिणत हो जाती है या भगवत्कृपासे बिना ही क्रमोन्नतिके मधुर-रतिका विकास हो जाता है, तब उसमें एक महान् मधुरतम दिव्य उच्छलन आता है, जो परम प्रियतम भगवान्के सुखके लिये जीवनके कण-कणको—अणु-अणुको नचा देता है। इसका परिणाम होता है—महाभाव, जिससे एक दिव्य अनिर्वचनीय—अचिन्त्य मधुरतम शान्त-रसका प्रादुर्भाव होता है, जो प्रेमी-प्रेमास्पदका भेद मिटाकर परस्पर परम और चरम एकत्व, सुखैकत्व तथा स्वरूपैकत्व-रूपमें प्रकट होता है और नित्य-निरन्तर परस्पर-सुखसम्पादनमें निरत मधुरतम प्रेमानन्दमय लीलातरङ्गमय होनेपर भी परम विलक्षण अपूर्व शान्त-स्वरूपमें परिणत हो जाता है। यही है—साध्य-शान्त-रस। यही प्रियतम भगवान्का दिव्य सेवालाभ है। यही भक्तका परम ज्ञान है। यही साक्षात्कार है। यही ज्ञानोत्तर कालमें प्राप्त प्रेम है और यही दिव्यातिदिव्य भगवत्सेवा-सुख है।

भगवान् एक, साधन अनेक

याद रक्खो—भगवान् एक हैं, परंतु उनतक पहुँचने
मार्ग अनेक हैं। साध्य—लक्ष्य एक है, परंतु उसे प्राप्त करने
साधन अनन्त हैं। साध्य एक होनेपर भी साधनोंमें अनेक
अनिवार्य है। जैसे काशी एक है, पर काशी पहुँचनेके पथ विभि
हैं। पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण—सभी दिशाओंके मनुष्य का
को लक्ष्य बनाकर चलेंगे तो काशी पहुँच जायँगे, परंतु वे चले
अपनी-अपनी दिशासे तथा अपने-अपने मार्गसे ही। मार्गोंके अनुभव
उनके पृथक्-पृथक् होंगे। कोई यह चाहे कि पूर्वसे आनेवाला पश्चिम
आनेवालेके पथसे ही आये तथा उत्तरसे आनेवाला दक्षिण
पथसे ही आये तो जैसे यह चाहना भ्रममूलक है, वैसे ह
भगवान्तक—अपने परम लक्ष्यतक पहुँचनेका साधन सबका एक ही है
—यह मानना भी भ्रम है। रुचि, समझ, अन्तःकरणके स्वरूप
त्रिगुणोंकी न्यूनाधिकता, पूर्व-संस्कार, वातावरण आदिके अनुसा
ही विभिन्न साधन होंगे। अतएव किसी भी भगवत्प्राप्तिके साधनकी
न निन्दा करो, न किसीको देखकर लुभाओ। लक्ष्यपर नित्य दृष्टि
रखकर अपने पथसे चलते रहो। भगवान् ही जीवनके परम साध्य
हैं, इसको क्षणभरके लिये भी न भूलकर नित्य-निरन्तर अपने साधनमें
लगे रहो। दूसरे क्या करते हैं, क्या कहते हैं, इसकी
ओर न देखकर निरन्तर अपने मार्गपर सावधानीसे आगे बढ़ते रहो।

याद रक्खो—यदि तुम्हारे जीवनमें दैवी सम्पत्ति बढ़ रही
है, मन विषयोंसे हट रहा है, भगवान्के प्रति आकर्षण अधिक हो
रहा है, मनमें शान्ति तथा आनन्दकी वृद्धि हो रही है और ये

धीमी या तेज जिस चालसे बढ़ रहे हैं तो समझ लो कि तुम उसी मात्रामें उत्तरोत्तर आगे बढ़ रहे हो और यदि तुम्हारे जीवनमें आसुरी सम्पत्ति बढ़ रही है, मन विषयोंकी ओर खिंच रहा है, भगवान्के स्मरणसे हट रहा है, मनमें अशान्ति तथा चिन्ताकी वृद्धि हो रही है और ये मन्द या तीव्र जिस गतिसे बढ़ रहे हैं तो उसी गतिसे तुम पीछे हट रहे हो, तुम्हारा पतन हो रहा है। अतएव सावधानीके साथ अपने जीवनकी भीतरी स्थितिको देखते रहो। तुम्हारा असलमें वही स्वरूप है, जैसी तुम्हारी भीतरी स्थिति है।

याद रक्खो—सबसे आवश्यक और सबसे प्रथम करने योग्य कार्य है—लक्ष्यका निश्चय। 'भगवान् ही जीवनके परम लक्ष्य हैं'—यह निश्चय करना और फिर इसी लक्ष्यको सामने रखकर जीवनमें प्रत्येक भीतरी-बाहरी क्रिया करना। जीवनका निश्चित लक्ष्य भगवान् होंगे तो तुम्हारा मुख भगवान्की ओर होगा और तुम धीमी या तेज चालसे भगवान्की ओर ही बढ़ते रहोगे; क्योंकि जीवमात्र सब चल ही रहे हैं। कालचक्रमें पड़े हुए नित्य-निरन्तर चलते रहना ही संसारमें जीवका कार्य है। फिर वह चाहे भगवान्के सामने मुख करके उनकी ओर चले या विषयोंको सामने रखकर उनकी ओर!

याद रक्खो—हिमालयकी तपोभूमिकी ओर जानेवालेको जैसे आगे-से-आगे शीतलता (ठंडक), एकान्त भूमि, त्यागी साधु-महात्मा तथा शान्ति-सुख आदि मिलेंगे और इसके विपरीत गरम देशमें भोगमय बड़े-बड़े नगरोंकी ओर जानेवालेको उत्तरोत्तर गरमी,

भीड़-भाड़, भोगी-विषयीलोग—चोर-ठग-डाकू, अशान्ति, चिन्ता आदिकी प्राप्ति होगी, ठीक वैसे ही भगवान्‌की ओर जानेवालेको आगे-से-आगे दैवी सम्पत्ति, सत्संगति, विषय-वैराग्य, शान्ति, आत्मानन्द, पवित्र आचार-विचार आदि मिलते रहेंगे और भोगोंकी ओर जानेवालेको आसुरी सम्पदा, कुसंगति, विषयासक्ति, अशान्ति, भोगोंमें आनन्दका भ्रम, अपवित्र पाप-कर्मादि, दिन-रातकी जलन आदि प्राप्त होंगे। अतएव अपने आपको इन लक्षणोंके अनुसार देख-जाँचकर निर्णय कर लो कि तुम किस ओर जा रहे हो और यदि दुःखमय अनित्य भोगोंकी ओर जा रहे हो तो तुम्हारे लिये दुःख तथा पतन निश्चित है, फिर भले ही तुम बुद्धिमान्, ज्ञानवान्, साधु, भक्त, महात्मा, नेता, अधिकारी, ऐश्वर्यवान् सुखी क्यों न समझे-कहे जाते हो या अपनेको मानते हो। अतः तुरंत विषयोंकी ओर पीठ करके भगवान्‌के सामने मुख कर लो।

याद रक्खो—तुम मनुष्यके रूपमें इस संसारमें इसलिये नहीं भेजे गये हो कि दिन-रात भोगलिप्सामें लगे रहकर पापजीवन बिताओ और पापकर्मोंका संचय बढ़ाकर रोते-कलपते मर जाओ। तुम्हें तो मानवरूप दिया गया है भगवान्‌की प्राप्तिके साधनमें लगकर पुण्य-जीवन बिताते हुए भगवान्‌को प्राप्त करनेके लिये, मृत्युको मारकर दिव्य नित्य भागवत-जीवनकी प्राप्तिके लिये। इस बातको याद रक्खो और अपनी योग्यता तथा रुचिके अनुसार निर्दोष परमार्थ-साधनको अपनाकर इधर-उधर न ताकते हुए चलते रहो और जीवनके नित्य परम साध्य भगवान्‌को प्राप्त करके सफलजीवन बन जाओ।

वस्तु और परिस्थितिका सदुपयोग

याद रक्खो—भगवान्‌ने तुम्हें जो कुछ भी दिया है, वह लाभ उठानेके लिये है। अतः प्रत्येक वस्तु तथा परिस्थितिका सदुपयोग करके उससे लाभ उठाओ। सबसे अधिक मूल्यवान् वस्तु है—समय। मृत्यु आनेपर एक क्षणका समय भी माँगे नहीं मिलता। अतएव जीवनके एक-एक क्षणका सदुपयोग करो। एक-एक श्वासका समय कल्याणमय कार्यमें लगाओ। समयका सर्वोत्तम सदुपयोग है—आलस्य-प्रमादको छोड़कर भगवान्‌का मङ्गलमय स्मरण करते हुए प्रत्येक कर्तव्य-कर्मको भगवान्‌की पूजा-सेवाके भावसे करना। अनर्थकारी और व्यर्थ साहित्य, सिनेमा, ताश आदि खेल, व्यर्थ निद्रा, व्यर्थ वार्तालाप आदिमें समय खोना उसका दुरुपयोग है। पापकर्मोंमें समय लगाना तो दुरुपयोग ही नहीं है, समयके साथ शत्रुता करके अपने विनाशको बुलाना है।

याद रक्खो—तुम्हें मन मिला है—भगवच्चिन्तन करने तथा सच्चिन्तनके द्वारा अपना तथा दूसरोंका मङ्गल सोचनेके लिये। ऐसा करना ही मनका सदुपयोग है और जीवनकी सफलताका साधन है। परंतु तुम इसे यदि विषाद, भय, चिन्ता, वैर, हिंसा, व्यर्थ-चिन्तन, काम-चिन्तन, विषयचिन्तनमें लगाते हो, पवित्र भावोंके बदले अशुद्ध विचारोंमें संलग्न रखते हो, नियन्त्रणमें न

रखकर व्यर्थ-अनर्थके विचारोंमें भटकने देते हो तो तुम इसका दुरुपयोग कर रहे हो।

याद रक्खो—तुम्हें वाणी मिली है—भगवन्नाम-गुणगानके लिये, स्वाध्यायके लिये, हितपूर्ण-मधुर-सत्य-भाषणके लिये—ऐसे शब्दोंके उच्चारणके लिये, जिनसे अपना तथा दूसरोंका कल्याण हो तथा जो शब्द वायुमण्डलमें फैलकर चिरकालतक वातावरणमें शुद्ध प्रेरणा देते रहें। ऐसा करना ही वाणीका सदुपयोग है। इसके विपरीत यदि तुम वाणीके द्वारा असत्य, अहितकारी, उद्वेग उत्पन्न करनेवाले कटु तथा अप्रिय शब्दोंका उच्चारण करते हो, परनिन्दा, परचर्चा, परहानि-चर्चा, आत्मप्रशंसा, सन्निन्दा या व्यर्थकी बातोंमें, दुनियाकी आलोचना-प्रत्यालोचनामें, मिथ्या गप-शपमें लगाते हो तो वाणीका दुरुपयोग करते हो।

याद रक्खो—तुम्हें धन-सम्पत्ति मिली है, वस्तुएँ मिली हैं—भगवान्‌की सेवाके लिये। जहाँ अभाव है, वहाँ भगवान् उन अभावग्रस्तोंके रूपमें तुमसे धन-सम्पत्ति तथा उन वस्तुओंको माँगते हैं। तुम उन वस्तुओंको अपनी न मानकर, अपने लिये कम-से-कम लेकर शेष सब यथायोग्य अभावग्रस्तोंको आदरपूर्वक प्रदान करनेके रूपमें भगवत्-सेवामें लगा देते हो, तब तो उनका सदुपयोग करते हो और तुम्हारी धन-सम्पत्ति तथा प्राप्त वस्तुओंकी सार्थकता होती है। इससे आत्मप्रसादके साथ तुम्हें भगवत्कृपा प्राप्त होती है। परंतु इसके विपरीत यदि तुम उस धन-सम्पत्तिपर अपना स्वामित्व—अपना अधिकार मानकर उसे अपने ही भोगमें लगाते हो, या संग्रह

करके ही उसके रक्षणकी चिन्ता करते हुए मर जाते हो तो तुम अपनी बड़ी हानि करते हो; क्योंकि भगवान्‌की वस्तुको अपनी मानकर तुम चोरी करते हो और इस चोरीका दण्ड तुम्हें भोगना पड़ेगा। तुम यदि धन-सम्पत्तिको स्वाद-शौकीनी, विलासिता-फैशन आदिमें, शराब-व्यभिचार, अनाचार-अत्याचार, अभक्ष्य-भक्षण-पान या वैर-हिंसामें लगाते हो तो उसका पूरा दुरुपयोग करते हो—आप ही अपने लिये अनन्त यन्त्रणामय नरक-भोगकी योजना बनाते हो। अतः सावधान हो जाओ। पापके कार्योंमें तो धन-सम्पत्ति या किसी भी प्राप्त वस्तुका उपयोग करो ही मत। अपने जीवन-निर्वाहमें भी अत्यन्त सादगीसे उनका कम-से-कम उपयोग करो। बढ़िया बेशकीमती कपड़े न पहनकर कम दामके सादे कपड़े पहनो और पैसोंको बचाकर उनसे अभावग्रस्तोंके लिये वस्त्रोंकी व्यवस्था करो। खान-पानमें सादगीसे बरतो और शेष पैसोंको अन्नके अभावसे दुखी पीड़ित भगवत्स्वरूपोंकी सेवामें—अन्नदानके रूपमें लगाओ। यही सदुपयोग है।

याद रक्खो—इसी प्रकार तुम्हें जो कान-नाक, आँख-जीभ, त्वक् इन्द्रियाँ मिली हैं,इनको भी भगवान्‌के साथ जोड़कर तथा इनके द्वारा सेवा करके इनका सदुपयोग करो। दुःख, निन्दा, अपमान, संकट आनेपर उनका भी सदुपयोग यों विचारकर करो कि ये सब हमारे ही किये दुष्कर्मोंके फल हैं। अतएव अब किसी प्रकार भी कोई दुष्कर्म न करके सदा सत्कर्म ही करना है।

महात्मा या महापुरुष कौन ?

याद रक्खो—महात्मा या महापुरुषके लिये यह आवश्यक नहीं है कि उनकी लोकमें प्रसिद्धि हो और लोगोंमें वे महात्मा या महापुरुष कहे-माने जाते हों। वरं कहे-माने जानेवाले लोकप्रसिद्ध महात्माओंमें वास्तविक महात्मा बहुत थोड़े होते हैं। महात्मा या महापुरुष वे हैं—जिनको सर्वत्र सब कुछ एकमात्र वासुदेव भगवान् ही दृष्टिगोचर होते हों।

याद रक्खो—सच्चे महात्मा या महापुरुषकी पहचान बाहरी लक्षणोंसे नहीं होती। वे सांसारिक मोहग्रस्त बुद्धिके तराजूपर वैसे ही नहीं तौले जा सकते, जैसे बड़े-बड़े लकड़े अथवा भारी-भारी पत्थरोंके तौलनेके काँटेपर हीरे नहीं तौले जा सकते। तथापि यह सर्वथा सत्य है कि महात्मा या महापुरुषकी बुद्धि-मन-इन्द्रिय—सब परमात्माके साथ संयुक्त होकर सर्वथा पवित्र हो चुकते हैं। अतएव न तो महात्मा या महापुरुषमें भोगासक्ति होती है, न भोगकामना रहती है और न भोगजगत्‌में कहीं उनकी ममता ही रहती है। उनकी बुद्धि-मन-इन्द्रियोंसे सहज ही केवल पावन-पावन भगवत्सेवा ही सम्पन्न होती रहती है।

याद रक्खो—महात्मा या महापुरुषकी दृष्टिमें यह जगत् इस रूपमें रहता ही नहीं, अतएव वे जगत्‌के द्वन्द्वोंसे सर्वथा अतीत केवल भगवत्स्वरूपमें ही नित्य स्थित रहते हैं। किसी भी

सांसारिक हानि-लाभ, दुःख-सुखमें वे कभी विचलित नहीं होते। न उन्हें कभी उद्वेग होता है न हर्ष; न चिन्ता होती है न आकाङ्क्षा; वे सदा सम रहते हैं और सदा ही सहज निर्लिप्त रहते हैं। तथापि सहज ही उनका हृदय बड़ा कोमल होता है। जहाँ वे अपने प्रति दीखनेवाले महान्-से-महान् दुःखमें वज्रादपि कठोर रहते हैं, वहाँ दूसरेके दुःखमें कुसुमादपि कोमल होते हैं। तनिकसे पर-दुःखसे द्रवित हो जाते हैं और आसक्त पुरुषकी भाँति उसका दुःख दूर करनेमें सचेष्ट हो जाते हैं।

याद रक्खो—महात्मा या महापुरुषके लिये मानापमानका कोई मूल्य नहीं है, न तो वे मान चाहते हैं, न अपमानसे डरते हैं। तथापि वे सहज ही स्वयं मानरहित रहकर दूसरोंको सम्मान देते हैं। जागतिक हिताहितसे सर्वथा परे होनेपर भी वे सहज स्वभावसे पर-हितमें ही लगे रहते हैं। उनसे किसीका अहित वैसे ही नहीं होता, जैसे अमृतसे कोई मरता नहीं और उनसे सबका हित वैसे ही होता है जैसे सूर्यसे सबको प्रकाश तथा गरमी मिलती है।

याद रक्खो—महात्मा या महापुरुष वाणीसे नहीं, अपने जीवनसे जगत्‌को उपदेश देते हैं; उनकी एक-एक चेष्टा सहज ही सांसारिक दुःखोंके विनाशका साधन बताती है, कुमार्गसे हटाकर सन्मार्गपर लगाती है और महान् कल्याणकी प्राप्ति करानेमें सहायक होती है। उनका मूक व्याख्यान जितना प्रभावशाली होता है, उतना संसारासक्त मानवोंके लाख-लाख कलापूर्ण व्याख्यान

नहीं होते। वस्तुतः उनके जीवनमें उतरे हुए उपदेशोंसे वे वाणीके उपदेशोंकी तुलना ही नहीं हो सकती।

याद रक्खो—महात्मा या महापुरुषका मिलना बहुत दुर्लभ है। मिलनेपर पहचानना बहुत ही कठिन है तथापि उन मिलना कभी व्यर्थ नहीं जाता। जैसे जाने-अनजाने अग्नि स्पर्श जला देता है और जाने-अनजाने अमृतका स्पर्श अमर देता है, वैसे ही जाने-अनजानेमें होनेवाला महात्मा या महापुरुष मिलन भी पाप-तापको भस्म करनेवाला और अमृतत्वरूप मुक्ति प्रदान करनेवाला होता है। महात्मा या महापुरुषकी पहच सहज नहीं होती, पर इतना समझ लेना चाहिये कि जिन सङ्गसे तुम्हारी भोगासक्ति घटकर भगवान्‌में अनुराग बढ़ता है आसुरी सम्पदाका नाश होकर दैवी सम्पत्तिकी प्राप्ति होती है भोगोंसे हटकर मन-बुद्धि भगवान्‌में रुचिपूर्वक लगते हैं, वे तुम्हा लिये निश्चय ही महात्मा या महापुरुष हैं।

याद रक्खो—महात्मा न तो अपने महात्मापनका ढिंढोर पीटा करते हैं, न विज्ञापन करते हैं। सहज स्वाभाविक ही उनक अस्तित्व जगत्‌के जीवोंका कल्याण करनेवाला होता है। वे चाहे प्रकट रहें या अप्रकट, लोग उन्हें जानें या न जानें, वे जहाँ होते हैं, वहाँ वैसे ही दैवी सम्पत्ति और भगवद्भावका विस्तार होता है, जैसे सुगन्धित पुष्पोंके बगीचेसे स्वाभाविक सुगन्ध फैलती रहती है।

सबमें निर्दोष भगवान् विराजित

याद रक्खो—सबके अंदर समरूपसे सर्वथा निर्दोष भगवान् विराजमान हैं। जितने भी दोष हैं, सब बाहरी हैं; स्वरूपगत नहीं हैं। तुम दोष देखोगे तो तुम्हें दोष दिखायी देंगे और भगवान्को देखोगे तो भगवान्! व्यवहार बाहरी स्वरूपके अनुसार करनेमें आपत्ति नहीं है, पर वह करो केवल व्यवहारके लिये ही और मन-बुद्धिमें निश्चय रक्खो कि इस रूपमें स्वयं भगवान् ही अभिव्यक्त हैं।

याद रक्खो—यदि किसीमें कोई दोष दिखायी देते भी हैं तो वे दोष वस्तुतः हैं ही, ऐसी निश्चित बात नहीं है। सम्भव है तुम्हारी द्वेषदृष्टि ही उसमें दोषकी कल्पना करती हो और यदि दोष हैं भी तो यह कभी मत मानो कि वे दोष सदा बने ही रहेंगे। आयी हुई चीज चली भी जायगी ही।

याद रक्खो—यदि तुम किसीमें केवल दोष ही देखते हो और तुमने यह निश्चय कर रक्खा है कि ये दोष तो

इनमें सदा रहेंगे ही, तो तुम अपना और उसका दोनोंका अ
कर रहे हो; उसमें दोषका आरोप करके तुम अपनी दृढ़ भावन
उन्हें यथार्थ दोष बनानेमें सहायता करते हो, अपने दृढ़ निश्च
उसमें दोषोंके सदा बने रहनेमें सहायता करते हो और दं
दीखनेके कारण सदा उसके प्रति द्वेषबुद्धि रखकर स्वयं जलते अ
उसे जलाते रहते हो। तुम्हारी द्वेषबुद्धि उसके मनमें भी तुम्ह
प्रति द्वेष पैदा कर देती है। इस प्रकार तुम द्वेषका एक ब
दुरूह जाल बना लेते हो और उसमें फँसकर सदा दुखी रह
हो। या एक विशाल विषवृक्ष लगाकर उससे जर्जरित हो
रहते हो।

याद रक्खो—यदि तुम किसीमें दोष न देखकर या गुण
देखकर उससे प्रेम करते हो, सदा अपनी मधुर सुधामयी सद्भावन
देते हो तो अपना और उसका दोनोंका सहज ही हित करते हो।
तुम्हारी प्रेमभरी गुणदृष्टि उसमें गुणोंका निर्माण करती है, उन्हें
बढ़ाती है और स्थायी बनाकर उसके जीवनको मधुर सुधापूर्ण
सद्गुणमय बनानेमें सहायता करती है। यों जब तुम उसका
हितसाधन करते हो तो स्वाभाविक उसके द्वारा तुम्हारा हितचिन्तन
और हितसाधन होता है। यह निश्चय मानो कि तुम दूसरेको
जो दोगे, वही अनन्तगुना होकर तुम्हारे पास लौट आयेगा। द्वेष
दोगे तो द्वेष, दुःख दोगे तो दुःख, प्रेम दोगे तो प्रेम और सुख
दोगे तो सुख !

याद रक्खो—तुम्हारा वास्तवमें कोई शत्रु नहीं है, तुम्हारे

मनमें रहनेवाला शत्रुभाव ही शत्रु है। तुम्हारे प्रति यदि कोई सचमुच ही शत्रुता करता हो, यद्यपि बहुत बार तो यदि कोई शत्रुता करता दीखता है, तो वह तुम्हारी अपने मनमें रही शत्रुभावनासे ही दीखता है। यह निश्चित नहीं है कि वह शत्रुता करता ही हो। परंतु तुम स्वयं उसे अपनी ही भूलसे शत्रु मानकर उसमें शत्रुताके अङ्कुर उत्पन्न करके उसे शत्रु बना लेते हो और ठीक इसके विपरीत सचमुच शत्रुता करनेवाले शत्रुको भी तुम अपनी प्रेमभरी मैत्रीभावनासे प्रेम-दान करके—सहज ही उसको सुख प्रदान तथा उसका निरहंकार गुप्त हित-साधन करके मित्र बना सकते हो। तुम अपना हित चाहते हो, सुख चाहते हो, अपने लिये अमृत चाहते हो तो बस, सभीका सदा प्रेमपूर्वक हित करते रहो, सभीको सदा प्रेमपूर्वक सुख देते रहो और सभीमें सदा अमृत वितरण करते रहो।

याद रक्खो—तुम्हारा किसीके सम्बन्धमें भी अशुभ निश्चय—अशुभके निर्माणके हेतु तथा सहायक बनकर तुम्हारा और उसका दोनोंका निश्चय ही अहित करेगा और शुभ निश्चय दोनोंका हित करेगा। अतएव सबमें परम मङ्गलमय, परम शुभ-स्वरूप भगवान्‌को देखो, सबके अंदर सदा विराजित भगवान्‌को जगाओ, उन्हें पूजो और उनका प्रकाश-विकास करके उसको तथा अपनेको धन्य कर दो। और ऐसा करके स्वयं भी परम धन्य हो जाओ।

अनर्थोंका मूल अहंकार

याद रक्खो—अहंकार ही सारे अनर्थोंका मूल है, अहंकारसे ही ममता तथा राग-द्वेष उत्पन्न होते हैं । 'मैं' है तो 'मेरा' है, 'मेरा' है तो मेरा सुरक्षित रहे और बढ़े, जो मेरा है उसमें राग और जो मेरा नहीं उसमें द्वेष । राग-द्वेष ही काम-क्रोध-लोभ-मोहकी उत्पत्तिमें प्रधान हेतु हैं ।

याद रक्खो—शरीरमें और नाममें 'अहं'-बुद्धि न हो तो शरीरके रहने या न रहनेमें सुख-दुःख क्यों होगा और क्यों निन्दा तथा स्तुतिमें सुख-दुःख होगा । निन्दा 'नाम'की होती है और प्रशंसा भी 'नाम'की । जब मनुष्य निन्दा और प्रशंसामें हानि-लाभ मानता है और दुःख-सुखकी अनुभूति करता है तो मानना चाहिये कि वह अहंकारसे अभिभूत है । अपने आत्मस्वरूपसे वञ्चित है ।

याद रक्खो—इस अहंकारके कारण ही बुद्धिमान्—वाणीसे आत्माका तत्त्व निरूपण करनेवाले बुद्धिमान् भी मूर्ख हो जाते हैं

और अपने-अपने मत-वादके लिये लड़ने-झगड़ने लगते हैं। इस अहंकारजनित अज्ञानके कारण ही स्थूल शरीरकी पूजा और नामकी प्रशंसा चाहते हैं। 'लोग मेरा चित्र या मूर्ति रखकर पूजा-सम्मान करें', 'मेरा नाम इतिहासमें अमर रहे'—ऐसी आकांक्षा आत्मामें तो होती ही नहीं। यह सारी अज्ञानकी क्रियाएँ होती हैं अहंकारके कारण ही। बुद्धिमान् मनुष्य भी अपनी प्रशंसात्मक जीवनी लिखना-लिखाना चाहता है, बुद्धिमान् मनुष्य भी गुण-प्रशंसाके हेतुभूत अभिनन्दनादि स्वीकार करता है, बुद्धिमान् मनुष्य भी लोकोपकारके नामपर अपने भावोंका प्रचार करता है और बुद्धिमान् मनुष्य भी धन कमाकर उसके द्वारा परोपकारके बहाने नाम-आरामकी आकांक्षा करता है। ये यथार्थ बुद्धिके लक्षण नहीं हैं। तमसाच्छन्न विपरीतदर्शी बुद्धिका ही यह स्वरूप है। इस बुद्धिवाला मनुष्य वास्तवमें बुद्धिमान् नहीं है। आत्म-दर्शनकी दृष्टिसे यह वास्तवमें मूर्खता ही है। यह सब अहंकारका ही अवश्यम्भावी दुष्परिणाम है।

याद रक्खो—इस अहंकारका दमन हुए बिना कभी न तो त्याग होगा, न शक्ति मिलेगी और न मूर्खता ही मिटेगी। अहंकारके नाशके लिये खास तीन उपाय हैं—

(१) अपने तथा जगत्के स्वरूपपर विचार करके अपनी दीनता, असमर्थता और असहायताका परिचय प्राप्त करना, उसे स्वीकार करना और सर्वशक्तिमान् सर्वसमर्थ सर्वज्ञ तथा अहैतुक सुहृद् भगवान्के शरणापन्न होकर उनसे नित्य संयोग कर लेना।